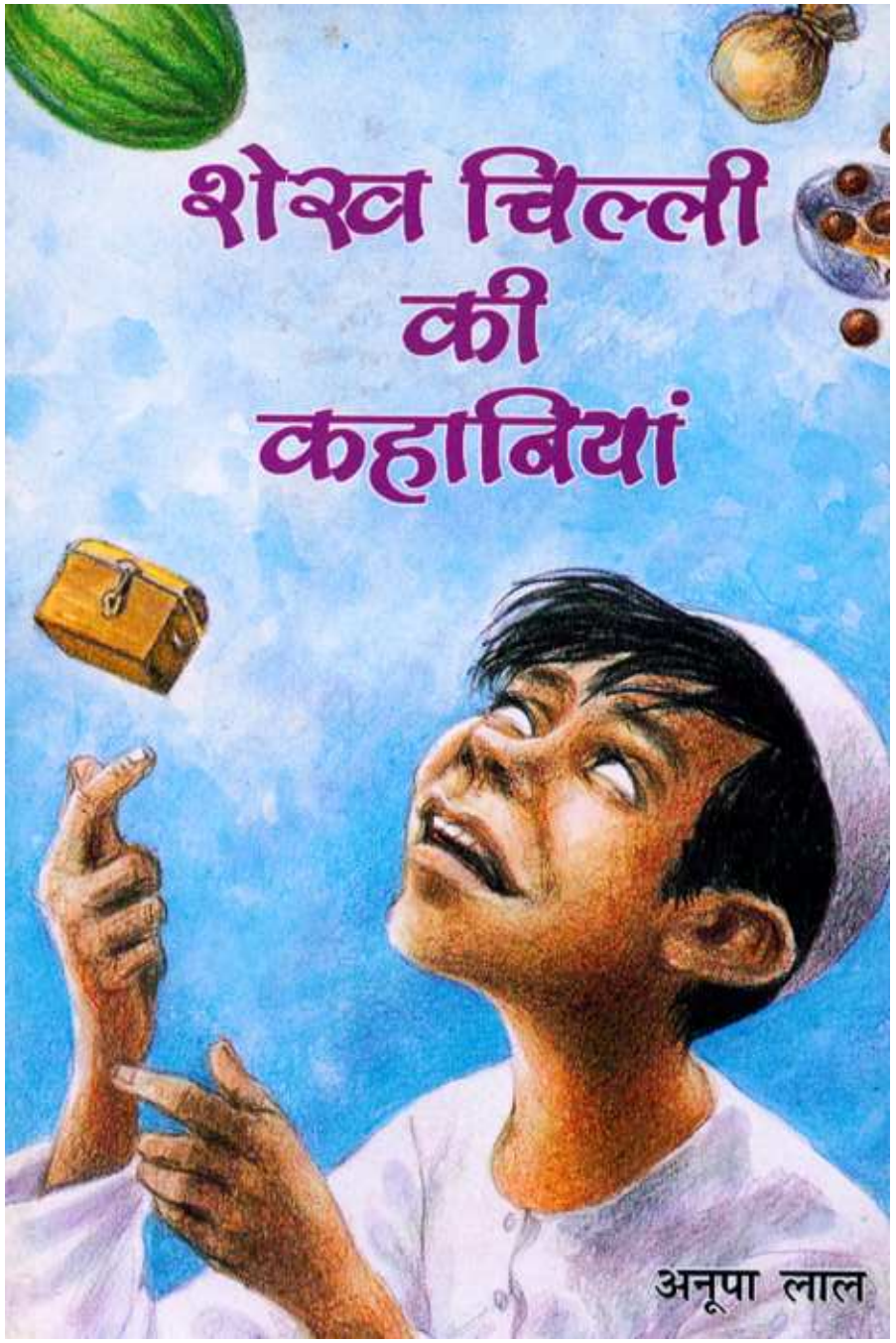
शेख चिल्ली
की
कहानियां
अनूपा लाल

शेख चिल्ली की कहानियां

अनूपा लाल

अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

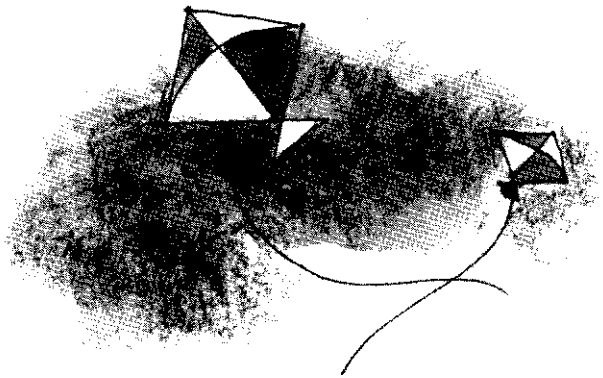

क्रम

	शेख चिल्ली के बारे में	5
1.	तेल का गिलास	7
2.	सिपाही और शेख कुएं में	11
3.	बीमार दरांती	15
4.	तरबूज़ और चोर	20
5.	बुरा सपना	24
6.	किस्सा काज़ी का - 1	28
7.	किस्सा काज़ी का - 2	35
8.	शेख की नयी नौकरी	41
9.	ससुराल की यात्रा	47
10.	मेहमान जो जाने को तैयार न था	52
11.	काला धागा	57
12.	तेंदुए का शिकार	61
13.	सबसे झूठा कौन?	65
14.	चोरी और इनाम	69

शेख चिल्ली के बारे में

शेख चिल्ली कौन था? इसका किसी को नहीं पता, पर शेख चिल्ली की कहानियों ने भारत और पाकिस्तान में कई पीढ़ियों का मन बहलाया है। शेख चिल्ली को अक्सर एक बेवकूफ और ऐसे सरल इंसान जैसे दर्शाया जाता है जो किसी भी काम को ठीक नहीं कर पाता है! वो दिन में सपने देखता है और हवाई महल बुनता है।

उसकी पैदाइश एक शेख परिवार में हुई। शेख - मुसलमानों की चार मुख्य उपजातियों में से एक है। शेख चिल्ली की मां एक गरीब विधवा थी। शेख चिल्ली के बारे में बहुत कम जानकारी है। इसलिए उसके बारे में लिखी कहानियों में सच्चाई और झूठ को अलग-अलग करना बहुत कठिन हो जाता है।

एक मत के अनुसार शेख चिल्ली का जन्म पाकिस्तान के बलूचिस्तान में हुआ, फिर वो हरियाणा में आ गया जहां उसने कई वर्ष झज्जर के नवाब के लिए काम किया। उसकी मृत्यु कुरुक्षेत्र में हुई जहां आज भी शेख चिल्ली के मकबरे को देखा जा सकता है। ऐसा कहा जाता था कि बुढ़ापे में शेख चिल्ली फकीर बन गया था। उसका नाम 'चिल्ली' शायद उसके द्वारा चालीस दिन तक लगातार प्रार्थना - जिसे 'चिल्ला' कहते हैं - करने के कारण पड़ा हो।

यह मत ऐतिहासिक रूप से सच है या नहीं इसकी पुष्टि करना संभव नहीं है।

इस महाद्वीप में बीरबल और तेनालीराम नाम के दो मजाकिया पात्र, काफी मशहूर हैं। शेख चिल्ली में इन दोनों हस्तियों की हाजिरजवाबी

भले ही न हो परंतु उसे बचपन से जवानी तक महज़ लोगों के उपहास का पात्र मानना, इंसानियत के खिलाफ सरासर नाइंसाफी होगी। वो एक सीधा-सादा इंसान था। उसके समाज के अनुसार चलने के तरीके शायद हमें हास्यास्पद लगें परंतु उसकी नियत में कोई खोट नहीं थी। उसके दिल में किसी के खिलाफ ईर्ष्या या नफरत नहीं थी, वो चालाकी, छल और फरेब से दूर एक निष्कपट और मददगार इंसान था। दिन में सपने देखना - शायद यह गलत हो। परंतु फिर वो कौन है जो आने वाले सुनहरे कल के सपने नहीं देखता?

सच बात तो यह है कि हम सभी में शेख चिल्ली का कुछ-न-कुछ अंश है। इतने बरसों से शेख चिल्ली की लोकप्रियता का शायद यही सच्चा कारण है।

तेल का गिलास

शेख चिल्ली इस समय वही कर रहा था जिसमें उसे सबसे ज़्यादा मज़ा आता था - पतंगबाज़ी। वो इस समय अपने घर की छत पर खड़ा था और आसमान में लाल और हरी पतंगों के उड़ने का मज़ा ले रहा था। शेख की कल्पना भी उड़ान भरने लगी। वो सोचने लगा - काश मैं इतना छोटा होता कि पतंग पर बैठ कर हवा में उड़ पाता...

"बेटा, तुम कहां हो?" उसकी अम्मी ने धूप की चौंध से आंखों को बचाते हुए छत की ओर देखते हुए कहा।

"बस अभी आया अम्मी," शेख ने कहा। काफी दुखी होते हुए उसने अपनी उड़ती पतंग को ज़मीन पर उतारा और फिर दौड़ता हुआ नीचे गया। शेख अपनी मां की इकलौती औलाद था। पति की मौत के बाद शेख ही उनका एकमात्र रिश्तेदार था। इसलिए अम्मी शेख को बहुत प्यार करती थीं।

"बेटा, झट से इसमें आठ आने का सरसों का तेल ले आओ," उन्होंने कहा और अठन्नी के साथ-साथ शेख को एक गिलास भी थमा दिया। "तेल ज़रा सावधानी से लाना और जल्दी से वापिस आना। रास्ते में सपने नहीं देखने लग जाना, क्या तुम मेरी बात को सुन रहे हो?"

"हां, अम्मी," शेख ने कहा। "आप बिल्कुल फिक्र न करें। जब आप फिक्र करती हैं तब आप कम सुंदर लगती हैं।"

"कम सुंदर," उसकी मां ने हताश होते हुए कहा। "मेरे पास सुंदर लगने के लिए पैसे और वक्त ही कहां हैं? अच्छा, अब चापलूसी बंद करो। फटाफट बाजार से तेल लेकर आओ।"

शेख दौड़ता हुआ बाज़ार गया। वैसे वो आराम से बाज़ार जाता परंतु उसकी अम्मी ने उससे झटपट जाने को कहा था इसलिए वो दौड़ रहा था।

"लालाजी, अम्मी को आठ आने का सरसों का तेल चाहिए," उसने दुकानदार लाला तेलीराम से कहा। उसके बाद उसने दुकानदार को गिलास और सिक्का थमा दिया।

दुकानदार ने एक बड़े पीपे में से आठ आने का सरसों का तेल नापा और फिर वो उसे गिलास में उंडेलने लगा। गिलास जल्दी ही पूरा भर गया।

"भई इस गिलास में तो बस सात आने का तेल ही आएगा," उसने शेख से कहा। "मैं बाकी का क्या करूं? क्या तुम्हारे पास और कोई बर्तन है, या फिर मैं तुम्हें एक आना वापिस लौटा दूं?"

शेख दुविधा में पड़ गया। उसकी अम्मी ने उसे न तो दूसरा गिलास दिया था और न ही पैसे वापिस लाने को कहा था। वो अब क्या करे? तभी उसे एक नायाब तरकीब समझ में आई! गिलास में नीचे एक गड्ढा - यानी छोटी सी कटोरी जैसी जगह थी। बाकी तेल उसमें आसानी से समा जाएगा!

उसने खुशी-खुशी तेल से भरे गिलास को उल्टा किया! सारा तेल बह गया। फिर शेख ने गिलास के पेंदे में बनी छोटी कटोरी की ओर इशारा किया। "बाकी तेल यहां डाल दो," उसने कहा।

लाला तेलीराम को शेख की बेवकूफी पर यकीन नहीं हुआ। उन्होंने सिर हिलाते हुए शेख की आज्ञा का पालन किया। शेख ने गिलास को सावधानी से उठाया और फिर वो घर की ओर चला। इस घटना पर लोगों ने टिप्पणियां की। पर शेख पर उनका कोई असर नहीं पड़ा।

जब वो घर पहुंचा तब उसकी मां कपड़े धो रही थी। "बाकी तेल कहां है?" मां ने गिलास के पेंदे की छोटी कटोरी में रखे तेल को देखकर पूछा।

"यहां!" शेख ने गिलास को सीधा करने की कोशिश की और ऐसा करने के दौरान बचा-खुचा तेल भी बहा दिया।

"बाकी तेल यहां था अम्मीजान, मैं सच कह रहा हूं। मैंने लालाजी को तेल इसमें डालते हुए देखा था। वो कहां चला गया?"

"ज़मीन के अंदर! तुम्हारी बेवकूफी के साथ-साथ!" उसकी मां ने गुस्से में कहा। "क्या तुम्हारी बेवकूफी का कोई अंत भी है?"

शेख ने खुद को बहुत अपमानित महसूस किया। "मैंने बिल्कुल वही किया जो आपने मुझसे करने को कहा था," उसने कहा। "आपने मुझसे इस गिलास में आठ आने का तेल लाने को कहा था, और वही मैंने किया। गिलास छोटा होने पर मुझे क्या करना है, यह आपने मुझे बताया ही नहीं था और अब आप मुझ पर नाराज़ हो रही हैं। आप गुस्सा न करें अम्मी। जब आप गुस्से में होती हैं तब आप..."

"अगर तुम मेरे सामने से तुरंत दफा नहीं हुए तो मैं तुम्हारे चेहरे को खूबसूरत बनाती हूं!" अम्मी ने पास पड़ी झाड़ू उठाते हुए कहा। "मेरी सहनशक्ति की भी एक सीमा है, जबकि तुम्हारी बेवकूफी असीमित है!"

शेख अपनी पतंग लेकर लपक कर छत पर गया। मां दुखी होकर दुबारा कपड़े धोने में लग गयीं। उन्हें अब तेल लाने के लिए खुद बनिये की दुकान पर जाना पड़ेगा। शेख ने बहुमूल्य समय के साथ-साथ बेशकीमती पैसों को भी गंवाया। उसके बावजूद उनका मानना था कि उनका बेटा बहुत ही आज्ञाकारी और प्यारा था।

तभी किसी ने बाहर से दरवाज़ा खटखटाया। लाला तेलीराम का छोटा लड़का तेल की बोतल लिए खड़ा था। "बुआजी, यह आपके लिए है," उसने कहा। "मेरे पिताजी ने इसे भेजा है। जब शेख भैया ने तेल से भरे गिलास को उल्टा, तो किस्मत से तेल वापिस पीपे में जा गिरा! भैया कहां हैं? उन्होंने मुझे पतंग उड़ाना सिखाने का वादा किया था।"

"वो ऊपर हैं। बेटा, तुम छत पर चले जाओ," शेख की मां ने तेल लेते हुए और उस छोटे लड़के के गाल को थपथपाते हुए कहा। फिर वो मुस्कुराती हुए दुबारा अपने काम में जुट गयीं। अल्लाह उस गरीब विधवा को भूला नहीं था!

सिपाही और शेख कुएं में

शेख चिल्ली अपने पैरों को इतने ध्यानमग्न होकर देख रहा था कि वो सीधे एक पेड़ से जाकर टकराया!

"उफ!" वो अपनी दुखती नाक को रगड़ते हुए चिल्लाया। अरे भई, यह पेड़ भला सड़क के बीच में खड़ा क्या कर रहा है? अम्मी ने उससे दर्ज़ी की दुकान पर जाने को और सड़क के बीचों-बीच चलने को कहा था।

"ध्यान रखना, इधर-उधर मत देखना जैसे की तुम्हारी आदत है, नहीं तो तुम कभी भी अपने मुकाम तक नहीं पहुंच पाओगे!" उन्होंने कड़े शब्दों में कहा था। "क्या तुम मेरी बात सुन रहे हो? अपनी नज़र सड़क पर रखना।"

उन्होंने यह तो नहीं कहा था - पेड़ से जा टकराना! फिर वो क्यों टकराया? क्योंकि वो उस समय एक खेत के बीचों-बीच था। जहां तक सड़क की बात थी वो दूर-दूर तक नदारद थी! उसके पैर एक दिशा में गए होंगे और सड़क कहीं दूसरी ओर होगी। शेख ने अपने पैरों को गुस्से से देखा परंतु उससे कुछ फायदा नहीं हुआ।

अच्छा! चलो जब पेड़ उसके सामने है तो जनाब पेड़ पर चढ़कर देख ही लेते हैं कि कहीं वो नदारद सड़क, जिस पर उसे होना चाहिए था दिख जाए। सड़क काफी दूर, दाएं को थी। शेख पेड़ की एक निचली टहनी पकड़ कर बस कूदने ही वाला था जब उसे अपने ठीक नीचे एक कुंआ दिखाई दिया! कुएं की गहराई में झिलमिलाता हुआ पानी बड़ा सुंदर दिखाई पड़ रहा था।

शेख टहनी से एक सूखी इमली की तरह लटका और झूलता रहा। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और कल्पना करने लगा कि वो हवा में अपनी प्रिय पतंग पर बैठकर उड़े जा रहा हो।

"ढुक! धड़ाक! ढुक! धड़ाक!"

उसका पालतू हाथी नीचे पगडंडी पर दौड़ा जा रहा था और अम्मी उसकी पीठ पर बैठीं थीं। वो लाल साटिन के कपड़े पहने थीं बिल्कुल वैसे ही जैसे सुलतान शेख चिल्ली की मां को पहनने चाहिए थे।

"ढुक! धड़ाक! ढुक! धड़ाक!"

शेख ने अपनी आंखें खोलीं। उसे दूर-दूर तक कोई हाथी का नामोंनिशां नहीं मिला। वो अभी भी कुएं के ऊपर लटका हुआ था! परंतु खेत में से गुज़रती कई पगडंडियों में से एक पर, घोड़े पर सवार एक सिपाही उसकी तरफ आ रहा था।

"घबराओ मत!" सिपाही चिल्लाया। "मैं तुम्हें बचा लूंगा! घबराओ मत!" घोड़े से उतरते सिपाही को शेख ने काफी रुचि से देखा। सिपाही की बहुत सुंदर मूंछें थीं। मूंछें सिरों पर मुड़ी हुई थीं। सिपाही का पूरा शरीर - पगड़ी से लेकर जूतियों तक धूल में लथपथ था।

"शांत रहो," घुड़सवार ने कहा, "और मेरी बात को बहुत ध्यान से सुनो। मेरा घोड़ा कुएं के उस पार छलांग लगाएगा। तुम्हारे नीचे पहुंचते ही मैं तुम्हारे पैर पकड़ लूंगा। उसी क्षण तुम पेड़ की टहनी को छोड़ देना। इस तरह तुम मेरे साथ घोड़े पर सुरक्षित रहोगे। समझे मेरी बात ?"

शेख ने ज़ोर से अपना सिर हिलाया। सिपाही अपने घोड़े पर चढ़ा। घोड़ा कुछ कदम पीछे गया और फिर कुएं की ओर तेज़ी से दौड़ा और फिर कुएं के ऊपर से कूदा! शेख के नीचे आते ही सिपाही ने उसके पैरों को पकड़ लिया। परंतु शेख जिस टहनी से लटका था उससे लटका ही रहा! घोड़ा तो छलांग लगाकर कुएं के उस पार पहुंच गया परंतु उसका मालिक शेख के पैरों से लटका रह गया।

"तुमने टहनी क्यों नहीं छोड़ी?" सिपाही ने कड़कदार पर आश्चर्य की आवाज़ में पूछा। फिर उसने अपनी गर्दन उठाकर शेख को देखने की

कोशिश की।

शेख को भी काफी अचरज हुआ! "मैं माफी चाहता हूं," उसने कहा, "ऐसा मैंने क्यों किया यह मुझे भी नहीं पता!"

उसने अपना आश्चर्य जताने के लिए अपने दोनों हाथ पसारे। उसका नतीज़ा यह हुआ कि वो और सिपाही दोनों सीधे कुएं में जाकर गिरे।

धड़ाम!

घोड़े को आवाज़ से कुछ खतरा महसूस हुआ और वो वहां से भाग लिया। पास के खेत पर काम करते किसान घोड़े को वापिस लाए और उन्होंने शेख और गुस्से में आए सिपाही को कुएं से बाहर निकाला।

शेख खुशनसीब निकला क्योंकि जब वो मिट्टी से सना और गीला, दर्ज़ी को बिना संदेश पहुंचाए वापिस घर पहुंचा तो उसकी अम्मी बिल्कुल भी नाराज़ नहीं हुयीं।

"अच्छा ही हुआ कि तुम दर्ज़ी के घर नहीं गए," अम्मी ने कहा। "क्योंकि वो तो मुझे यहीं पर मिल गया। पर उसके घर के पास तो कोई कुआं है नहीं, फिर तुम कैसे..."

कुआं न जाने कहां से आ गया था, शेख को याद आया। और साथ में वो पेड़ और घोड़े पर सवार सिपाही भी। कितना रोमांचक अनुभव था! शेख उसे याद करते हुए मुस्कुराया और फिर उसने अपनी पतंग उठाई।

"अम्मीजान," छत की ओर दौड़ते हुए उसने कहा, "जब मैं बड़ा होऊंगा तो मैं अपनी मूंछों को इतना बढ़ाऊंगा कि आप उन्हें देख कर दंग रह जाएंगी!"

बीमार दरांती

शेख चिल्ली की मां गांव के रईस घरों में इधर-उधर के काम करके अपनी आजीविका चलाती थी।

"बेटा शेख," उन्होंने एक दिन सुबह को कहा, "देखो मैं फातिमा बीबी के घर उनकी लड़की की शादी की तैयारी में मदद के लिए जा रही हूं। मैं अब रात को ही वापिस लौटूंगी। हो सकता है कि मैं शायद अपने लाडले के लिए कुछ मिठाई वग़ैरा भी साथ में लाऊं। फातिमा बीबी काफी दरियादिल औरत हैं।"

"बेटा तुम दरांती लेकर जंगल में जाना और वहां से पड़ोसी की गाय के लिए जितनी हो सके उतनी घास काट कर लाना। इंशाअल्लाह, आज हम दोनों मिलकर काफी कमाई कर सकते हैं। देखो अपना वक्त बरबाद मत करना और न ही दिन में सपने देखना। तुमने अगर सावधानी से काम नहीं किया तो तुम्हें दरांती से चोट भी लग सकती है।"

"आप मेरे बारे में बिल्कुल भी फिक्र न करें अम्मीजान," शेख ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा। और फिर वो खुशी-खुशी जंगल की ओर चला। वो रास्ते में उन मिठाइयों के बारे में सोचता रहा जो उसकी अम्मी, फातिमा बीबी के घर से लाएंगी। क्या वो नर्म, भूरे, चाशनी में डूबे गुलाब जामुन होंगे, जो उसने एक बार पहले कभी खाए थे? उनका स्वाद उसे बार-बार याद आ रहा था।

"बंद करो यह बकवास!" उसने खुद को झिड़कते हुए कहा। "अम्मी ने कहा था न कि दिन में सपने नहीं देखना।"

वो जंगल में पहुंचने के बाद काफी लगन से काम में लग गया। दोपहर के खाने के समय तक उसने काफी सारी घास काट डाली थी। उसने उसका एक बड़ा बंडल बनाया और उसे घर ले आया। पड़ोसी के घर घास छोड़ने के बाद और कुछ आने कमाने के बाद वो घर लौटा और उसने चटनी के साथ मोटी रोटी खायी। तब उसे याद आया कि वो अपनी दरांती को तो जंगल में ही भूल आया था। वो दौड़कर वापिस जंगल गया। दरांती वहीं पड़ी थी जहां उसने उसे छोड़ा था। तपती धूप में दरांती का ब्लेड एकदम गर्म हो गया था और शेख ने जब उस गर्म लोहे को छुआ तो उसे एक झटका सा लगा। उसकी दरांती को आखिर क्या हुआ? वो अपनी दरांती का मुआयना कर रहा था तभी पड़ोस का लल्लन उस रास्ते से गुज़रा।

"मियां, तुम किसे इतनी गौर से देख रहे हो?" उसने पूछा।

"अपनी दरांती को। उसे कुछ हो गया है। वो काफी गर्म है!"

"हाय राम! उसे बुखार हो गया है!" लल्लन ने शेख की नासमझी पर हंसते हुए कहा। "तुम उसे किसी हकीम के पास ले जाओ। पर ज़रा रुको। मुझे मालूम है कि तेज़ बुखार में हकीमजी क्या दवाई देते हैं। आओ मेरे साथ चलो।"

दरांती के लकड़ी के हैंडल को सावधानी से पकड़कर लल्लन, शेख को एक कुंए के पास ले गया। वहां उसने दरांती को एक लंबी रस्सी से बांधा और फिर उसे कुंए के ठंडे पानी में लटकाया।

"अब तुम इसे इसी हालत में छोड़कर घर चले जाओ," उसने शेख से कहा। "अब तुम रात होने से पहले आना। तब तक दरांती का बुखार उतर गया होगा।" अरे बेवकूफ! उतनी देर में मैं दरांती को भी वहां से गायब कर दूंगा, लल्लन ने चुपचाप कहा। मैं उसे छिपा दूंगा या फिर बेच दूंगा और फिर शेख की मां दरांती खोने के लिए उसकी खूब मरम्मत करेगी!

"यकीन करो मियां," उसने ज़ोर से कहा। "बुखार का यही सबसे अच्छा इलाज है!"

शेख चिल्ली ने उसकी बात पर विश्वास किया और घर वापिस चला गया। फिर वो सो गया और जब उसकी नींद खुली उस समय सूरज ढल रहा था। "मैं अम्मी के घर आने से पहले ही दरांती ले आता हूं," उसने सोचा। "अब तक उसका बुखार उतर गया होगा।"

फिर वो कुएं की तरफ चला। लल्लन के घर के सामने से गुज़रते समय उसे अंदर से किसी के कराहने की आवाज़ आई। शेख अंदर गया। लल्लन की दादी आंगन में एक खाट पर पड़ी इधर-उधर करवटें बदल रहीं थीं। शेख जब उनके पास पहुंचा तो एकदम डर गया। उनका शरीर बहुत गर्म था। उन्हें तेज़ बुखार था और शेख के अलावा उनकी मदद करने वाला और कोई न था। परंतु अब लल्लन की दया से शेख को तेज़ बुखार का सही इलाज पता था।

शेख ने बूढ़ी औरत को सावधानी से अपने कंधे पर उठाया और फिर वो कुएं की ओर बढ़ने लगा।

"मियां, तुम लल्लन की दादी को कहां लिए जा रहे हो?" एक पड़ोसी ने पूछा।

"इलाज के लिए," शेख ने जवाब दिया। "उन्हें बहुत तेज़ बुखार है।"

उस समय लल्लन और उसके पिता, बूढ़ी दादी के लिए दवाई लेने हकीम के पास गए हुए थे। जब वो घर वापिस पहुंचे तब उन्होंने बूढ़ी दादी को नदारद पाया! जब वो बूढ़ी दादी को तलाशते हुए इधर-उधर भटक रहे थे, तब उन्हें वही पड़ोसी मिला जिसने शेख चिल्ली से पूछा था।

लल्लन को जब पूरी बात समझ आई तो उसके होश उड़ गए! वो दौड़ता हुआ कुएं के पास गया और उसके पीछे-पीछे उसके पिता भी हो लिए। लल्लन को दरांती चुराने का वक्त ही नहीं मिला था। शेख ने तभी अपनी दरांती को कुएं में से निकाला था और वो बूढ़ी औरत को रस्सी से बांधने की तैयारी कर रहा था। बस उसी समय लल्लन और उसके पिता वहां पहुंचे।

"अरे पागल, तुम यह क्या कर रहे हो?" लल्लन के पिता ने चिल्लाते हुए कहा। फिर उन्होंने शेख को एक तरफ धकेला और अपनी बेहोश मां की रस्सियां खोलने लगे।

"चाचा, उन्हें बहुत तेज़ बुखार है!" शेख ने काफी उत्तेजित होकर कहा। "उन्हें रस्सी से बांधकर कुएं में लटका दीजिए। बुखार का यही सबसे अच्छा इलाज है। लल्लन ने ही तो मुझे बताया है।"

लल्लन के पिता अपने लड़के की ओर चीते की तरह झपटे।

"तुमने यह क्या नई खुराफात की है?" वो चिल्लाए। "हरामखोर! मैं तुझे बाद में सबक सिखाऊंगा! अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है तो फौरन अपनी दादी को घर पहुंचाने और हकीम को लाने में मेरी मदद करो!"

लल्लन की दादी कुछ दिनों में ठीक हो गयीं, पर लल्लन की उसके पिता ने जमकर पिटाई लगाई। शेख की अम्मी ने जब यह पूरी घटना सुनी तो उन्हें यह समझ में ही नहीं आया कि वो हंसें या रोयें! वो शेख के लिए जो स्वादिष्ट गुलाब जामुन लायीं थीं उनको उसने मज़ा ले-लेकर खाया। बाद में अम्मी ने शेख को समझाया कि दरांती क्यों गर्म हुई थी और क्यों किसी चीज़ को कुएं में डालना उसका बुखार उतारने का सबसे अच्छा तरीका नहीं था!

तरबूज़ और चोर

शेख चिल्ली को नींद नहीं आई। फातिमा बीबी ने उस शाम शेख की अम्मी को एक तरबूज़ दिया था, जो वो इत्तफ़ाक़ से घर लाना भूल गयीं। बस शेख उसी तरबूज़ के बारे में ही सोचता रहा। पूरे पिछले हफ्ते अम्मी रोज़ाना कई घंटों के लिए फातिमा बीबी के यहां उनकी बड़ी लड़की की शादी की तैयारियों में मदद करने को जाती थीं। और हर शाम अम्मी शेख के लिए फातिमा बीबी द्वारा दी गई चीज़ें लाती थीं। पहले दिन वो रसीले गुलाब जामुन लायीं थीं। उसके बाद में खीर और फिर केले। आज अम्मी को एक बड़ा तरबूज़ मिला था। शेख के मुंह में तरबूज़ के बारे में सिर्फ सोच कर ही पानी आने लगा! अम्मी को तरबूज़ का वज़न बहुत भारी लगा इसलिए वो उसे फातिमा बीबी के घर के आंगन में ही छोड़ आयीं। शेख सुबह जाकर तरबूज़ को ला सकता था। परंतु वो तो तरबूज़ अभी खाना चाहता था। अभी! तुरंत! उसका भूखा पेट उसे आदेश दे रहा था।

शेख उठा। अम्मी अभी गहरी नींद में सोईं थीं। उसने चुपचाप, रात के अंधेरे में और गांव की सुनसान गलियों में फातिमा बीबी के घर की ओर चलना शुरू किया। जैसे ही वो आंगन की चारदीवारी पर से कूदा उसे सामने अपना तरबूज़ पड़ा हुआ दिखाई दिया। तरबूज़ कोयले के एक ढेर के ऊपर पड़ा हुआ था। वो बस तरबूज़ को उठा कर चलने वाला ही था कि उसे घर के अंदर से आती कुछ आवाज़ें सुनाई पड़ीं। वहां कौन हो सकता है? घर तो खाली था। पूरा परिवार तो पास के गांव में रिश्तेदारी में गया हुआ था। क्या वे सब जल्दी लौटकर वापिस आ

गए थे? फिर उनके घर के बाहर ताला क्यों लगा हुआ था? शेख इन सब बातों के बारे में सोच रहा था तभी उसे अपनी ओर आते कुछ कदम सुनाई पड़े।

"हाय राम!" कराहने की आवाज़ आई। वो आवाज़ लल्लन की थी। उसे पहचानने में शेख को कोई दिक्कत नहीं हुई। "मैं उस बेवकूफ शेख चिल्ली को मार डालूंगा! उसकी वजह से ही मेरे पिता ने मुझे इतनी बुरी तरह मारा है कि मेरी हड्डी-हड्डी दुख रही है! और अब खिड़की से घुसते हुए टूटे हुए कांच से मेरा हाथ कट गया है।"

"अब कराहना बंद भी करो!" एक दबी सी आवाज़ आई। शेख इस आवाज़ को नहीं पहचान सका। जैसे ही वो दोनों लोग सामने आए शेख कोयले के बोरों के पीछे छिप गया। वो कोयलों के बोरों के बीच की झिरी में से उन्हें देखता रहा। लल्लन के साथ कोई बुरी नियत वाला अजनबी था जिसे शेख ने बाज़ार में घूमते हुए देखा था। लल्लन एक थैले में कुछ भर कर ले जा रहा था।

"जल्दी करो," अजनबी ने कहा। "चलो, फटाफट माल को बांट लेते हैं।"

जब अजनबी ठीक बोरों के सामने अपनी पीठ करके बैठ गया तो शेख बेचारा बहुत घबराया। अजनबी ने थैले को लल्लन से छीना और उसके अंदर के सारे माल को ज़मीन पर उंडेल दिया। गले के हार, सोने और चांदी की चूड़ियां, चांदी के गिलास और सोने के सिक्के, हल्की चांदनी में झिलमिलाने लगे। शेख उन सब गहनों को ताकता रहा। उसे मालूम था कि फातिमा बीबी ने उन्हें अपनी लड़की की शादी के लिए इकट्ठा किया था। अम्मी ने शेख को उनमें से हर एक के बारे में बताया था। और अब यह दोनों लोग उन गहनों को चुरा रहे थे!

"तुमने आधे से ज़्यादा हिस्सा ले लिया है!" लल्लन ने कमज़ोर आवाज़ में अपना विरोध दर्शाया। उसके बाद उस अजनबी ने लूट का थोड़ा सा और माल उसकी ओर बढ़ा दिया।

"गनीमत है कि तुम्हें इतना भी माल मिल रहा है!" अजनबी

घुर्राया। "मेरे बिना तो तुम्हारी घर में चोरी करने की हिम्मत ही नहीं होती!"

"यह घर भुतहा है," लल्लन ने फुसफुसाते हुए इधर-उधर बेचैनी से देखते हुए कहा। "कुछ लोग अब भी इस घर को भुतहा मानते हैं।"

"तो चलो इससे पहले कि भूत हमें पकड़े हम यहां से भाग लेते हैं!" अजनबी हंसा। उसकी हंसी में चालाकी छिपी थी। "अगर तुम लूट का कुछ और माल चाहते हो तो अपने साथ उस तरबूज़ को भी ले जाओ!"

अजनबी ने कोई तीन-चौथाई सोने और चांदी को थैले में भरा। बाकी को अपनी जेबों में भरते समय वो कुछ बुदबुदा रहा था। लल्लन ने खड़े होकर तरबूज़ को उठाने की कोशिश करी। परंतु बोरों के पीछे से शेख चिल्ली भी तब तक खड़ा हो गया था और तरबूज़ को अपनी पूरी ताकत से पकड़े हुए था! जैसे ही शेख की उंगलियां, लल्लन की उंगलियों से टकरायीं वैसे ही लल्लन को अपनी ज़िंदगी का सबसे बड़ा धक्का लगा!

"भूत!" वो बुदबुदाया। "भू... भूत!"

शेख बोरों से टिककर तरबूज़ को कसकर पकड़े रहा। कोयले के दो बोरे अचानक लुढ़के और लल्लन और उस अजनबी के ऊपर जाकर गिरे। अब लल्लन ने सारी सावधानी को ताक पर रख दिया।

"भूत!" वो ज़ोर से चिल्लाया।

"भूत!" डरा हुआ शेख चिल्ली भी ज़ोर से चिल्लाया। "भूत! चोर! भूत!"

इससे पहले कि दोनों चोर भाग पाते भीड़ जमा हो गई। कोयले की धूल में सने दोनों चोरों को कोतवाली ले जाया गया। लल्लन अभी भी बुदबुदा रहा था, "भूत! भूत!"

एक पड़ोसी फातिमा बीबी के परिवार के वापिस आने तक लूट के गहनों की पहरेदारी करता रहा। शेख को लोग हीरो जैसे उसके प्यारे तरबूज़ के साथ घर वापिस पहुंचाने के लिए गए।

बुरा सपना

"बेटा शेख, क्या तुमने दुबारा वही सपना देखा?" शेख चिल्ली की चिंतित मां ने उससे एक सुबह पूछा। "तुम पूरी रात बेचैन रहे और करवटें बदलते रहे।"

शेख चिल्ली ने अपना सिर हिलाया और फिर अपनी बाहों को अम्मी के गले में डाला। अम्मी ही तो उसका पूरा परिवार थीं।

"आज मैं तुम्हें हकीमजी के पास ले चलूंगी," अम्मी ने कहा। "इंशाअल्लाह वो तुम्हारे इन खराब सपनों का खात्मा कर देंगे।"

हकीम ने बड़े धैर्य से शेख चिल्ली की कहानी को सुना। कई रातों से शेख चिल्ली को एक बुरा सपना आ रहा था जिसमें वो खुद एक चूहा होता था और गांव की सारी बिल्लियां उसका पीछा कर रही होती थीं! जागने के बाद भी बड़ी मुश्किल से ही शेख चिल्ली अपने आपको यह समझा पाता था कि वो एक चूहा नहीं बल्कि एक लड़का है।

"मेरे बच्चे को यह तकलीफ क्यों है?" शेख की मां ने हकीम से पूछा। "जब वो छोटा था तो एक जंगली बिल्ली ने मेरे बचाने से पहले, उसे ज़ोर से नोचा था। क्या वो उसी सपने को बार-बार देखता है?"

"शायद," हकीम ने कहा। "पर आप इसकी ज़्यादा परवाह न करें। खराब सपनों की बीमारी जल्दी ही ठीक हो जाएगी। बेटा शेख, आज से हर शाम को तुम मेरे पास दवा के लिए आना। और यह मत भूलना कि तुम एक चूहा नहीं बल्कि एक खूबसूरत नौजवान हो।"

यह सुनकर शेख का चेहरा मुस्कान से खिल उठा। हर शाम हकीम, बिना बाप के इस लड़के से कोई एक घंटा बातचीत करते थे।

फिर उसे कोई अहानिकारक दवाई देकर घर भेज देते जिससे कि शेख को रात को अच्छी नींद आए।

धीरे-धीरे शेख चिल्ली और हकीम अच्छे दोस्त बन गए। हकीम ने शेख को अच्छी सेहत और साफ-सफाई के बारे में सरल बातें बतायीं।

"बेटा शेख," उन्होंने एक शाम को कहा, "अगर मेरा एक कान गिर जाए तो क्या होगा?"

"हकीमजी, तब आप आधे बहरे हो जाएंगे," शेख ने हकीम के बड़े-बड़े कानों को घूरते हुए कहा।

"ठीक फर्माया," हकीमजी ने कहा। "और अगर मेरा दूसरा भी कान गिर जाए तो?"

"तो फिर आप अंधे हो जाएंगे, हकीमजी," शेख ने कहा।

"अंधा?" घबराए हुए हकीमजी ने पूछा।

"हां।" शेख ने उत्तर दिया। "अगर आपके कान नहीं होंगे, तो फिर क्या आपका चश्मा नहीं गिरेगा?"

हकीमजी यह सुनकर ठहाका मार कर हंसे। "तुम ठीक कहते हो शेख बेटा," उन्होंने कहा। "इसके बारे में तो मैंने कभी सोचा ही नहीं था!"

धीरे-धीरे शेख के खराब सपने बंद हो गए। कि वो एक चूहा है इस बात की सपने में उसने कल्पना करनी बंद कर दी। एक दिन हकीम का एक पुराना दोस्त उनसे मिलने के लिए आया। शेख से बाज़ार से कुछ गर्म जलेबियां लाने के लिए कहा गया। वो बस निकल ही रहा था कि उसे कुछ फीट की दूरी पर एक बड़ी बिल्ली दिखाई दी।

"हकीमजी, मुझे बचाइए!" शेख, हकीमजी के पीछे छिपकर गिड़गिड़ाया।

"मेरे बेटे, अब तुम चूहा नहीं हो। क्या तुम्हें यह पता नहीं है?"

"मुझे अच्छी तरह पता है हकीमजी," शेख को अभी भी डर लग रहा था। "पर क्या बिल्ली को यह बात किसी ने बताई है?"

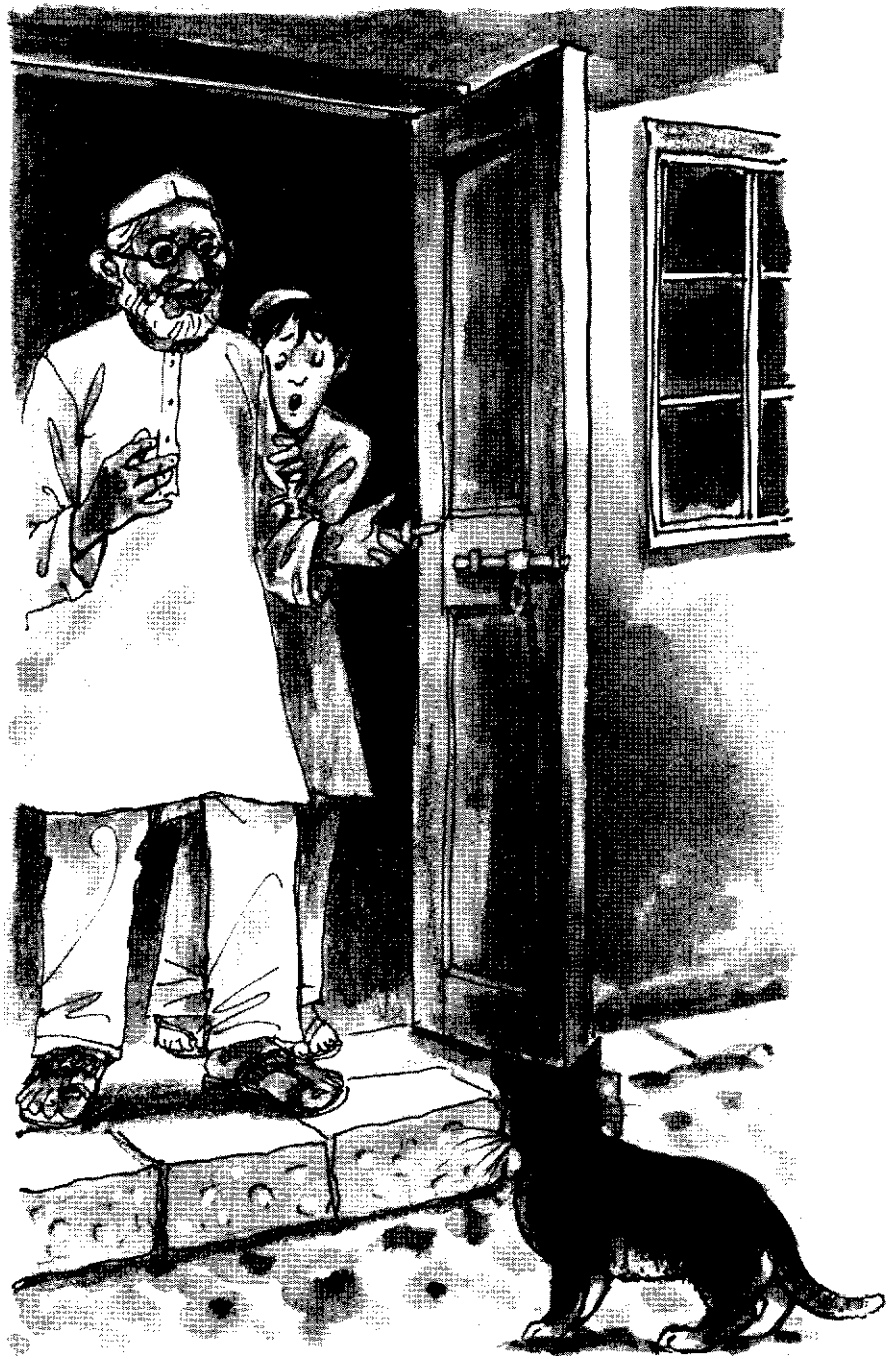

अपनी मुस्कुराहट को दबाते हुए हकीम ने बिल्ली को भगा दिया। उसके बाद शेख को दिलासा दिलाने के बाद उन्होंने उसे जलेबियां लेने के लिए भेजा।

"मैं इस लड़के के पिता को अच्छी तरह जानता था," हकीमजी के मेहमान ने शेख चिल्ली के बारे में कुछ सुनने के बाद कहा। "मैं उसके घर जाकर उसकी मां से दुआ-सलाम करना चाहूंगा।"

"शेख आपको अपने घर ले जाएगा," हकीमजी ने कहा। कुछ करारी जलेबी खाने के बाद और कहवा पीने के बाद शेख और मेहमान, शेख के घर की ओर चले।

"क्या यह सड़क सीधे तुम्हारे घर को जाती है?"

"नहीं," शेख ने कहा।

मेहमान को कुछ आश्चर्य हुआ। "मुझे लगा यह जाती होगी," उन्होंने कहा।

"नहीं, यह सड़क मेरे घर नहीं जाती है," शेख ने कहा।

"फिर वो कहां जाती है?" मेहमान ने पूछा।

"वो कहीं भी नहीं जाती है," शेख ने शांत भाव में उत्तर दिया।

मेहमान उसकी ओर घूरने लगा। "बेटा, इससे तुम्हारा क्या मतलब है?"

"जनाब," शेख ने शांति से कहा। "सड़क भला कैसे जा सकती है? उसके पैर तो होते नहीं है। सड़क तो एक बेजान चीज़ है। वो जहां पर है वहीं पड़ी रहती है। परंतु हम इस सड़क से मेरे घर तक जा सकते हैं। आपकी मेहमाननवाज़ी करके मुझे और अम्मी को बहुत खुशी होगी।"

शेख की निष्कपटता से उस उमर दराज़ इंसान का दिल पसीज गया। कुछ सालों बाद शेख चिल्ली उसका दामाद बना!

किस्सा काज़ी का - 1

"बेटा, तुम अब कोई कामकाज ढूंढ़ो," शेख चिल्ली की मां ने उसे एक शाम खाना परोसते हुए कहा। "तुम अब एक नौजवान हो। जल्द ही हमें तुम्हारे लिए एक पत्नी की तलाश करनी होगी! परंतु जो आदमी कुछ कमाता ही न हो उसे भला कौन अपनी लड़की देगा? अब जाकर कोई अच्छी, पक्की नौकरी ढूंढ़ो। मैं अब बूढ़ी हो रही हूं। कब तक अकेले दोनों के लिए कमाई करूंगी?"

"ज़्यादा देर तक नहीं अम्मी," शेख ने प्यार से कहा। "तुम बस थोड़ा सा और इंतज़ार करो। कल शाम तक मेरी नौकरी लग गई होगी।"

"बेटा, ऐसा ही हो!" अम्मी ने काफी भावुक होकर कहा।

कहना तो आसान था परंतु नौकरी मिलना एक कठिन काम था! वो किसके पास जाए इस बारे में शेख सोचने लगा। गांव में कई लोगों ने उसे पहले नौकरी पर रखा था। परंतु कोई भी नौकरी चंद हफ्तों से अधिक नहीं टिकी थी। अगली सुबह उसने लाला तेलीराम से पूछने का निश्चय किया कि क्या उन्हें एक और नौकर चाहिए?

पहले एक बार लालाजी के काम पर जाते समय शेख चिल्ली एक नमक का बोरा लेकर तालाब में जा गिरा था। पर शेख यह उम्मीद लगाए बैठा था कि शायद लालाजी उस बात को अब तक भूल गए होंगे। आखिर वो सारा नमक कहां गया? शेख इस सोच में इतना गहरा डूबा था कि वो सामने से आते दो भाइयों से टकरा गया। जिन कुछ सालों के लिए शेख गांव के स्कूल में पढ़ा था उस समय यह दोनों भाई उसकी ही कक्षा में थे।

"मियां, आप फिर दिन में सपने देख रहे हैं?" बड़े भाई ने पूछा। "तभी तो मौलवी साहब ने आपको स्कूल से निकाल दिया था।"

"भाई, मैं तो नौकरी ढूंढ़ने की बात सोच रहा था," शेख ने कहा। "अम्मी का कहना है कि अगर मेरी नौकरी नहीं लगेगी तो कोई मुझसे शादी नहीं करेगा।"

यह सुनकर दोनों भाई हंसने लगे। "उनका कहना बिल्कुल ठीक है," एक ने कहा, "और हम अभी तुम्हें एक नौकरी सुझा सकते हैं, परंतु काम इतना आसान न होगा। तुम्हें एक बेहद कंजूस काज़ी के लिए काम करना होगा। वो तुम्हें महीने के बीस रुपए तनख्वाह देगा। साथ में मुफ्त खाना और रहने का स्थान भी मिलेगा। परंतु फिर वो तुम्हारी जान हराम कर डालेगा और तुम झक मारकर नौकरी छोड़ने को मजबूर हो जाओगे। जब तुम नौकरी छोड़ोगे तो तुम्हें उस महीने की तनख्वाह नहीं मिलेगी और साथ में काज़ी तुम्हारे कान का थोड़ा सा टुकड़ा भी कुतर लेगा! हमारे साथ-साथ उस काज़ी ने और बहुत से लोगों के भी कान कुतरे हैं। उसका आखिरी नौकर अभी दो दिन पहले ही, रोता हुआ वापिस आया था।"

"अगर नौकर के नौकरी छोड़ने की जगह काज़ी खुद नौकर को निकालता है तो?" शेख ने पूछा। उसे वो बहुत सारे मालिक याद आए जिन्होंने उसे निकाला था। "क्या फिर काज़ी खुद अपना कान कुतरवाने को राज़ी होगा?"

"ऐसा आज तक तो हुआ नहीं है और न ही इसके होने की कोई संभावना है। तुम थोड़े सावधान रहना मियां। काज़ी साहब बहुत ही चालाक आदमी हैं!"

"मुझे उनका पूरा नाम और पता दो," शेख चिल्ली ने कहा। "मैंने अम्मी से वादा किया है कि आज शाम तक मैं कोई नौकरी ढूंढ़ निकालूंगा।"

शेख कई मील चलकर उस शहर में पहुंचा जहां काज़ी रहते थे। काज़ी तभी कचहरी से लौटे थे।

"सलाम सरकार," शेख ने कहा। "मैं आपके लिए काम करने आया हूं।"

काज़ी ने शेख के भोले चेहरे को देखा। चलो एक और बकरा फंसा! उन्होंने सोचा। यह भी बहुत ज़्यादा दिन नहीं टिकेगा! उन्होंने ज़ोर से कहा, "क्या तुम्हें नौकरी की शर्तें पता हैं?"

शेख ने अपना सिर हिलाया। "जी सरकार! बीस रुपए महीना तनख्वाह और साथ में मुफ्त खाना और सोने की जगह।"

"इसके बदले में तुम्हें जो भी काम दिया जाएगा उसे तुम्हें करना होगा," काज़ी ने कड़े शब्दों में कहा। "मैं तुम्हें नौकरी से नहीं निकालूंगा। परंतु अगर तुमने नौकरी छोड़ी तो तुम्हें उस महीने की तनख्वाह नहीं मिलेगी। साथ में मैं तुम्हारा थोड़ा सा कान भी कुतरूंगा जो तुम्हें सारी ज़िंदगी तुम्हारे बेकार काम की याद दिलाएगा! आयी बात समझ में? क्या तुम्हारे कोई सवाल हैं?"

"सिर्फ एक सरकार," शेख ने कहा। "अगर आप मुझे नौकरी से निकालेंगे, तो..."

"वो कभी नहीं होगा!" काज़ी ने उसकी बात को बीच में काटते हुए कहा।

"लेकिन अगर ऐसा हुआ तो मैं आपसे एक साल की तनख्वाह लूंगा और साथ में आपके कान का थोड़ा सा टुकड़ा भी कुतरूंगा!"

काज़ी का मुंह लटक गया! किसी ने भी आज तक उनसे इस तरह की बात कहने की जुर्रत नहीं करी थी। यह लड़का सच में बिल्कुल ही बेवकूफ होगा!

"चलो ठीक है," उन्होंने रुखाई से कहा। "मुझे तुम्हारी शर्तें मंजूर हैं। अब अंदर जाओ। बेगम साहिबा तुम्हें काम के बारे में बता देंगी।"

शेख को इस नौकरी में लगभग सभी काम करने थे - घर की झाड़ू और सफाई, कपड़े धोना, बर्तन मांजना, बाज़ार जाना और काज़ी के तीन साल के बेटे की देखभाल करना। शेख हर आदेश का मुस्कुराते हुए अपनी धीमी गति से पालन करता। उसका नतीजा यह होता कि

कभी, कोई भी काम पूरा नहीं होता था। जब काज़ी की पत्नी उसे बर्तन मांझने के लिए बुलातीं तो वो अधूरे धुले कपड़े छोड़कर वहां चला जाता। वो बर्तन भी आधे धुले छोड़ देता क्योंकि तब तक बाज़ार जाने का वक्त हो जाता।

"इस बार तुमने कितने बड़े बेवकूफ को पकड़ा है!" काज़ी की पत्नी शिकायत के लहज़े में कहतीं थीं। "एक भी काम ऐसा नहीं है जो वो ठीक से करता हो।"

"सीख जाएगा," काज़ी जवाब में कहते। "या फिर वो काम छोड़ देगा। बस थोड़ा धैर्य रखो और उससे जी-तोड़ काम लो।"

रात हाने तक शेख थककर चूर-चूर हो जाता। एक रात जब शेख सपने में दूल्हा बना हुआ था तभी काज़ी ने आकर उसे झकझोर कर जगाया।

"देखो, ज़रा बच्चे को पेशाब कराना है," काज़ी ने कहा। "उसे बाहर ले जाकर घर के पीछे नाली के ऊपर बैठा दो।"

शेख को अपने सुहाने सपने में दखल डालने पर बड़ा गुस्सा आया। परंतु वो उठा और काज़ी के बेटे को बाहर ले गया। बाहर अंधेरा था और तेज हवा चल रही थी। बच्चा शेख से कसकर चिपट गया।

"क्या तुमने कभी भूत देखा है?" शेख ने लड़के से पूछा। यह सुनकर लड़का शेख से और ज़ोर से चिपट गया। "घबराओ नहीं," शेख ने उससे कहा। "मुझे नाली में कुछ तैरता नज़र आ रहा है। परंतु वो भूत नहीं हो सकता। क्योंकि भूतों को तैरना नहीं आता।"

यह सुनकर लड़का दहाड़े मार कर रोता हुआ वापिस घर में अपनी मां के पास भागा। शेख फिर से उस सपने का मज़ा लेने लगा जिसमें वो एक दूल्हा बना था। इस बीच में काज़ी के बेटे ने अपनी मां के बिस्तर को गीला ही कर दिया!

बेगम तो आग-बबूला हो उठीं। "इस बेवकूफ से मेरा पिंड छुड़ाओ!" उन्होंने अगले दिन सुबह के समय अपने पति से कहा। "यह

आदमी तो बच्चे को रात को पेशाब कराने जैसे सरल काम भी नहीं कर सकता है।"

"मैं उसे नौकरी से नहीं निकाल सकता," काज़ी ने गंभीरता से कहा। "परंतु मैं उसे एक ऐसा सबक सिखाऊंगा जिसे वो ज़िंदगी भर नहीं भूलेगा।" उन्होंने शेख चिल्ली को बुलाया और कहा, "शहर के बाहर जंगल के पास मेरी 10 बीघा ज़मीन है। तुम अभी वहां पर जाओ। मेरे हल-बैल मेरे पड़ोसी के पास हैं। तुम जाकर उस 10 बीघा ज़मीन को हल से जोत कर आओ। हां, जुताई अच्छी तरह से करना। जो कुछ तुमने किया है उसका मैं कल आकर मुआयना करूंगा। और घर वापिस आने से पहले तुम्हें यह दो काम और करने हैं। एक मोटा सा खरगोश पकड़ कर लाना। मुझे आज रात को खाने के लिए स्वादिष्ट गोश्त चाहिए। हां, और आते वक्त अपने सिर पर जलाऊ लकड़ी का गट्ठा भी रखकर लाना मत भूलना। और शाम को मेरे कचहरी से लौटकर आने से पहले ही घर वापिस आ जाना। अच्छा, अब तुम जाओ।"

"मैंने आज सुबह इस बेवकूफ को कुछ खाने-पीने को भी नहीं दिया है," काज़ी की बेगम ने फर्माया। "इसे जरा भूखे पेट मेहनत-मशक्कत करने दो!"

"तुम आज रात को उसे कुछ हड्डियां चूसने को दे देना!" काज़ी ने एक कड़वी हंसी के साथ कहा। "मुझे तो लगता है कि इतनी कड़ी मेहनत से वो पहले ही भाग लेगा और खाना देने की नौबत ही नहीं आएगी!"

शेख चिल्ली की जेब में जो सिक्के थे उससे उसने चने खरीदे, पानी पिया और फिर वो काज़ी की ज़मीन की ओर चला। उसने हल-बैल से काज़ी के खेत को दोपहर होने तक जोता। अचानक उसे बाकी दो और काम याद आए और वो जलाऊ लकड़ी ढूंढ़ने लगा। काटने लायक लकड़ी के सभी पेड़ या तो बहुत बड़े थे या फिर वे बहुत दूर थे। फिर उसकी निगाह हल के ऊपर पड़ी। उसने आश्चर्यचकित राम सिंह से कुल्हाड़ी मांगी और बैलों को रिहा करने के बाद हल के

कुल्हाड़ी से टुकड़े-टुकड़े कर डाले!

अब काज़ी के रात के भोजन के लिए उसे सिर्फ एक खरगोश पकड़ना बाकी था। खरगोश की तो बात दूर की रही, शेख को खेतों में एक चूहा तक नहीं दिखा था। परंतु उसे सड़क पर एक मरा हुआ कुत्ता ज़रूर दिखा।

वो शाम को काज़ी के घर वापिस लौटा। उसके सिर पर हल के टुकड़ों का गट्ठा था और वो एक मरे हुए कुत्ते की पूंछ को खींच कर ला रहा था।

"सरकार," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "यह कुत्ता किसी भी खरगोश से बड़ा है। इससे आपके भोजन के लिए बढ़िया गोश्त बनेगा! और मैं बहुत सारी जलाऊ लकड़ी लाया हूं जिसके लिए हल की लकड़ी मेरे बहुत काम आई!"

"अरे बेवकूफ!" काज़ी गुस्से में चिल्लाया। उनका चेहरा गुस्से से आग-बबूला हो गया था। "अभी मेरे सामने से दफा हो जाओ! मैं तुम से बाद में निबटूंगा।"

किस्सा काजी का - 2

"तुमने इस आदमी को नौकरी से क्यों नहीं निकाला?" काजी की परेशान बीबी ने रात को उनसे पूछा।

"मैं अपना कान कुतरवाऊं और इस हरामखोर को एक साल की तनख्वाह भी दूं और साथ में पूरे शहर का मज़ाक भी बनूं! मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा।"

"तब तुम एक काम करो। एक और नौकर ढूंढ़ो," बीबी ने गुस्से में कहा। "और इस बेशकीमती शेख चिल्ली को तुम सिर्फ अपने काम के लिए ही रखो।"

"बहुत अच्छा," काज़ी ने कहा। "तुम शेख चिल्ली को अब से कम-से-कम खाना देना। बस इतना खाना देना कि वो मरे नहीं। मैं उसे रोज़ाना अपने साथ कचहरी ले जाया करूंगा। देखते हैं कि वो बिना काम और भोजन के कितने दिन ज़िंदा रह पाता है।"

परंतु काज़ी को जल्दी ही अपनी गलती का अहसास हो गया। शेख कचहरी के बाहर बैठे-बैठे, दिन में सपने देखता या फिर और लोगों से गप्पे लगाने में काफी खुश था। जब लोगों को यह पता चला कि उसे इतना कम खाना मिलता है तो लोगों ने खुद उसे अपना भोजन देना शुरू कर दिया!

एक दिन काज़ी की पत्नी ने नए नौकर के हाथ कचहरी में काज़ी के लिए एक संदेश भेजा। उन्हें आटा खरीदने के लिए तुरंत कुछ पैसों की ज़रूरत थी। दरबान ने नौकर को कचहरी के अंदर घुसने नहीं दिया।

"मैं तुम्हारी मदद करूंगा," शेख ने कहा। वो कचहरी के दरवाजे

पर खड़ा होकर चिल्लाया, "सरकार, घर में न तो पैसे हैं और न ही आटा! आप जल्दी कुछ करें!"

काज़ी को यह सुनकर बहुत शर्म आई। "बेवकूफ!" उन्होंने बाद में शेख को डांटा। "खबरदार! जो आज से तुमने दुबारा कचहरी में इस तरह का अड़ंगा डाला!"

कुछ दिनों बाद काज़ी के घर में आग लग गई। बेगम का नया नौकर दौड़ता हुआ कचहरी में काज़ी को इसकी सूचना देने के लिए आया। "तुम घर जाकर मदद करो," शेख ने उससे कहा। "मैं काज़ी साहब को इसके बारे में बता दूंगा।" क्योंकि शेख को कचहरी के समय काज़ी साहब के काम में अड़ंगा डालने के लिए सख्ती से मना किया गया था इसलिए वो शाम तक धैर्य से इंतज़ार करता रहा। तब तक काज़ी का आधे से ज़्यादा घर जलकर राख हो चुका था!

काज़ी की पत्नी एक रईस व्यवसायिक परिवार की थीं। काज़ी ने घर को दुबारा बनाने के लिए कर्ज़ की मांग के लिए अपनी ससुराल जाने की ठानी। उन्होंने शैतानी से दूर रखने के लिए शेख चिल्ली को भी घोड़े पर अपने साथ ले लिया।

काज़ी की ससुराल कोई पचास मील दूर होगी। बीच में काज़ी को दस्त लगे और उन्हें शौच के लिए जंगल में जाना पड़ा। तभी सड़क पर से एक काफिला गुज़रा। वो शेख चिल्ली को ही घोड़े का असली मालिक समझ बैठे।

"हम तुम्हें इस घोड़े के लिए 200 रुपए देंगे," उन्होंने उससे कहा। "क्या तुम इतने में उसे बेचोगे?"

"हां," शेख ने कहा। उसने पैसों को रखा और घोड़े की थोड़ी सी पूंछ काटी और फिर ज़मीन में एक गड्ढा करके उसने पूंछ के बालों को उसमें गाढ़ दिया।

"सरकार, ज़रा जल्दी कीजिए!" वो काज़ी को आते देखकर ज़ोर से चिल्लाया। "अभी-अभी घोड़े को खींचकर इस चूहे के बिल में ले जाया गया है! अगर आप मेरी मदद करेंगे तो हम उसे खींचकर बाहर

निकाल लेंगे!" काज़ी को कुछ समझ नहीं आया फिर भी वो शेख को पकड़े रहे। और शेख ज़मीन में गढ़ी घोड़े की पूंछ को खींचता रहा। अंत में पूंछ बाहर निकल आई परंतु शेख और काज़ी दोनों धड़ाम से ज़मीन पर जाकर गिरे!

"चूहे हमसे ताकतवर निकले, सरकार," शेख ने दुखी अंदाज़ में कहा। "घोड़ा सीधा ज़मीन के अंदर चला गया है। अब हमें उसे बाहर निकालने के लिए फावड़ों के साथ खुदाई करने वाले ताकतवर लोग चाहिए होंगे!"

"तुम यह क्या बकवास बक रहे हो, बेवकूफ!" काज़ी गुस्से में चिल्लाए। "भला एक घोड़ा किसी चूहे के बिल में कैसे घुस सकता है? नमकहराम! जल्दी से बताओ कि तुमने मेरे घोड़े का क्या किया है? घोड़ा कहीं खो गया है या तुमने उसे बेच डाला है? अब हम आगे का सफर कैसे करेंगे? पैदल?"

"सरकार, पास ही में एक गांव है जहां से आपको एक नया घोड़ा मिल सकता है," शेख ने कहा। "एक घोड़े के गुम जाने से आप जैसे रईस आदमी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

बड़बड़ाते हुए काज़ी ने अगले गांव से एक और घोड़ा खरीदा और उसे एक पल के लिए भी अपनी आंखों से ओझल नहीं होने दिया! उन्होंने खुद तो घोड़े पर बैठकर यात्रा की और शेख को पहला घोड़ा खोने की सज़ा में पैदल दौड़ाया।

रात को वे एक सराय में रुके। काज़ी ने वहां खाना खाया और उसके बाद शेख की ओर कुछ सूखी रोटी फेंकते हुए कहा, "तुम रात भर उस घोड़े के साथ ही रहना। तुम उसकी मालिश करते रहना और खबरदार जो तुमने उसे अपनी आंखों के सामने से ओझल होने दिया! क्या तुम मेरी बात समझे?"

"जी सरकार," शेख ने अपनी जंभाई को छिपाते हुए बड़े भीरू भाव में कहा। दिन भर चलने की थकान के बाद वो घोड़े के पास ही बैठ गया और धीरे-धीरे उसकी मालिश करने लगा। शेख को कब नींद

आई और कब कोई घोड़े को चुराकर ले गया इसका उसे पता ही नहीं चला! वो जब सुबह उठा तो उसने घोड़े को नदारद पाया। शेख ने उसे चारों ओर ढूंढ़ा। अगर उसने घोड़े को जल्दी नहीं खोजा तो काज़ी उसकी चमड़ी उधेड़ कर रख देगा! फिर उसे घास के ढेर में जिसे घोड़ा खा रहा था दो लंबे कान नज़र आए।

"वाह!" शेख ने कानों को पकड़ते हुए कहा, "तो तुम यहां छिपे हुए थे!" वो कान एक खरगोश के थे। शेख जब उन्हें निहार रहा था तभी काज़ी भी वहां पहुंचे।

"घोड़ा कहां है?" काज़ी ने कड़कदार आवाज़ में पूछा।

"यह रहा सरकार," शेख ने झट से उत्तर दिया।

"अबे गधे, यह तो खरगोश है, घोड़ा नहीं!"

"सरकार यह सच में घोड़ा है। मैंने घोड़े की इतनी कसकर मालिश की कि वो छोटा होकर खरगोश बन गया। मैंने उसके कानों की मालिश नहीं की। आप देखिए! वे अभी भी घोड़े के नाप के हैं!"

"तुम दुनिया के सबसे बड़े बेवकूफ हो!" काज़ी ने कहा। यह कहते हुए काज़ी की आवाज़ गुस्से से लड़खड़ाने लगी। "और मैं दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा बेवकूफ हूं कि मैंने तुम्हें नौकरी पर रखा! चलो अब तैयार हो क्योंकि अब चलने का वक्त हो गया है।"

वो बाकी रास्ते पैदल ही चल कर गए। ससुराल पहुंचने के बाद उनका काफी आदर-सत्कार हुआ।

काज़ी की सास शेख चिल्ली को अलग ले गयीं। "तुम्हारे मालिक की तबियत कुछ ठीक नहीं लगती है," उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि लंबे सफर के कारण उन्हें कुछ थकान हो गई है।"

"उनका पेट कुछ खराब है," शेख ने कहा।

"फिर मैं उनके लिए कुछ खिचड़ी बना देती हूं," बूढ़ी औरत ने कहा।

"पर आप उसे खूब चटपटा बनाएं," शेख ने कहा। "उन्हें चटपटा खाना बहुत पसंद है।"

रात को भोजन के समय शेख चिल्ली को सबसे स्वादिष्ट बिरयानी, मटन-करी, सब्जियां और खीर परोसी गई। और काज़ी को केवल एक कटोरा भर मसालेदार खिचड़ी ही खाने को मिली!

काज़ी को इतनी भूख लगी थी कि वो सब खिचड़ी खा गए। रात को उनके पेट में दर्द हुआ और उन्हें तुरंत शौच के लिए जाना पड़ा।

"मुझे बाहर जाना है," उन्होंने शेख को उठाया। "तुम भी मेरे साथ चलो।"

"सरकार," शेख ने नींद में कहा, "वहां कोने में एक मिट्टी का मटका रखा है। आप उस का प्रयोग क्यों नहीं करते? सुबह को उसे खाली कर देंगे।"

काज़ी को रात में कई बार शौच जाना पड़ा। सुबह तक वो मटका आधा भर चुका था।

"इसे बाहर फेंक कर आओ," उन्होंने शेख को आदेश दिया।

"मैं यह काम नहीं करूंगा," शेख ने कहा, "मैं मेहतर नहीं हूं।"

काज़ी को कुछ समझ नहीं आया। गुस्से में आकर उन्होंने मटका उठाया और उसे जंगल में फेंकने चल पड़े। उनका साला उनके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ आया। उसे आते हुए देख काज़ी ने शर्म के मारे अपनी रफ्तार बढ़ा दी। परंतु उनका साला तेजी से दौड़कर उनके पास पहुंच गया।

"भाईजान, आप अपने सिर पर यह बोझ लाद कर कहां जा रहे हैं? लाईए, मैं आपकी मदद करता हूं।"

"नहीं! नहीं!" काज़ी ने विरोध किया। "नहीं, ठीक है।" और काज़ी ने मटके को कस कर पकड़ने की कोशिश की। परंतु मटका उसके हाथों से फिसल कर उन दोनों के बीच में जाकर गिरा जिससे दोनों लोग गंदगी से सन गए।

शेख इस पूरे नज़ारे को खिड़की में से देख रहा था। "सरकार," वो काज़ी की ओर दौड़ता हुआ चिल्लाया। "कहीं आपके चोट तो नहीं आई!"

काज़ी ने विनम्र भाव से अपने दोनों हाथ जोड़े। "मैं तुमसे विनती करता हूं शेख चिल्ली, तुम मुझे अकेला छोड़ दो," उन्होंने कहा। "मैंने तुम्हें बहुत झेला है और बर्दाश्त किया है! तुम जीते। मैं हारा। मैं तुम्हें फौरन नौकरी से निकालता हूं। तुम पूरे साल की तनख्वाह ले लो और मेरे दोनों कान भी कुतर लो, परंतु मेरी निगाह के सामने से सदा के लिए दफा हो जाओ!"

"आप अपने कान अपने पास ही रखें, सरकार," शेख ने कहा। "हां, यह रहे वो दो सौ रुपए जो मुझे आपका पहला घोड़ा बेचकर मिले। मुझे अफसोस है कि दूसरा घोड़ा खरगोश में बदल गया। उस रात आपने घोड़े की मालिश करने के लिए कह कर भारी गलती की!"

एक साल की पूरी तनख्वाह जेब में रखे शेख चिल्ली बड़ी जीत हासिल करके शान से घर लौटा!

शेख की नयी नौकरी

अब शेख चिल्ली के दूसरी नौकरी ढूंढ़ने का समय आ गया था। काज़ी से मिले सारे पैसे अब धीरे-धीरे करके खर्च हो गए थे। एक दिन वो सुबह के समय पास के शहर की ओर चला। सड़क पर उसके आगे एक छोटे कद का आदमी, सिर पर एक बड़ा पीपा रख कर जा रहा था। वो पसीने से एकदम लथपथ हो गया था।

"सुनो," उसने शेख के पास से गुज़रते समय कहा। "अगर तुम इस घी के पीपे को शहर तक ले जाओगे तो मैं इसके लिए तुम्हें दो आने दूंगा।"

कुछ पैसे कमाने की खुशी में शेख ने पीपे को अपने सिर पर रख लिया और चलने लगा। इन दो आनों से मैं कुछ मुर्गी के चूज़े खरीदूंगा, उसने सोचा। जब वो चूज़े बड़े हो जाएंगे तो मेरे पास बहुत सारी मुर्गियां और अंडे होंगे। उन अंडों को बेचकर मैं मालामाल हो जाऊंगा! फिर मैं गांव का सबसे आलीशान मकान खरीदूंगा और दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़की से साथ शादी करूंगा! फिर अम्मी को कभी काम करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। वो और मेरी बेगम आराम से रानियों की तरह बैठी रहेंगी और उनकी सेवा के लिए चालीस नौकरानियां होंगी! मैं पूरे दिन पतंग उड़ाया करूंगा – बड़ी-बड़ी, रंग-बिरंगी पतंगे, जो खास मेरे लिए ही बनी होंगी। सारा गांव मुझे पतंग उड़ाता हुआ देखने के लिए इकट्ठा होगा – फर्र, फर्र!

अपनी सोच में पूरी तरह मगन शेख ने काल्पनिक पतंग को उड़ाने के लिए अपने दोनों हाथों को हवा में लहराया। उससे घी का पीपा

धड़ाम से ज़मीन पर आ गिरा और सारा घी बह गया!

"बेवकूफ! तुमने यह क्या किया?" वो छोटा आदमी चिल्लाया। "तुमने तीस रुपए के घी को पानी की तरह बहा दिया!"

"तीस रुपए कौन सी बड़ी रकम है, पर मेरी तो किस्मत ही लुट गई," शेख ने दुखी होते हुए कहा। "मैं तो पूरी तरह तबाह हो गया!"

वो आदमी गुस्से में आग-बबूला होकर चला गया। शेख भी चलते-चलते एक बड़े घर के गेट के पास पहुंचा जहां एक घोड़ा-गाड़ी खड़ी थी।

"कोचवानजी," शेख ने घोड़ा-गाड़ी के चालक को संबोधित करते हुए कहा, "क्या आप बता सकते हैं कि मुझे कहां नौकरी मिल सकती है? मैं कोई भी काम करने को तैयार हूं।"

"तुम अंदर जाकर कोशिश करो," कोचवान ने कहा, "मुझे लगता है कि रसोइए को एक मददगार की तलाश है।"

शेख घर का चक्कर लगाकर पीछे गया और वहां जाकर रसोइए से मिला। शेख को नौकरी मिल गई। वो पूरे दिन भर सब्जी काटता रहा और बर्तन मांजता रहा। रात तक वो थककर एकदम पस्त हो गया और उसे ज़ोर की भूख लगी।

"यह लो!" रसोइए ने शेख की ओर दो सूखी रोटी और कुछ अचार फेंकते हुए कहा। "तुम चाहो तो मेरे कमरे के बाहर सो सकते हो, परंतु सुबह पौं फटते ही उठ जाना। इस घर में सुबह तड़के ही काम शुरू हो जाता है।"

शेख लेटते ही खर्राटें भरने लगा। आधी रात को भूख के कारण उसकी नींद खुल गई। उसने दुबारा सोने की बहुत कोशिश की परंतु भूख ने उसे जगाए रखा। अंत में उसने रसोइए के कमरे में झांक कर देखा। रसोइए का कमरा खाली था पर उसे बाहर बाग में से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। शेख ने थोड़ा करीब जाकर देखा। रसोइया और माली आपस में चुपचाप बातचीत कर रहे थे। उन दोनों के बीच में नींबूओं का एक ढेर पड़ा था।

"इस बार मुझे एक अच्छा खरीदार मिल गया है," शेख ने माली को कहते हुए सुना। "अभी तक हमें जो कीमत मिल रही थी वो उससे दुगना मूल्य देगा!"

"अच्छा!" रसोइए ने कहा। "तुम बेफिक्र रहो। बूढ़ी औरत को कोई भी शक नहीं है!"

शेख ने उनका ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए गले से कुछ आवाज़ निकाली। दोनों चोर उसे देखकर एकदम घबराए!

"मुझे बहुत भूख लगी है," शेख ने कहा। "भूख के मारे मैं सो नहीं सका।"

क्या शेख को वाकई भूख लगी थी या वो अपना मुंह चुप रखने के लिए कुछ पैसे चाहता था? रसोइए को कुछ समझ में नहीं आया। उसने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाले और उसे दे दिए। "किसी से एक शब्द भी नहीं कहना!" उसने गुर्रा कर कहा। "अब जाओ!"

"मैं जा रहा हूं," शेख ने कहा। परंतु वो आधी रात को अपने लिए खाना कहां से खरीदेगा? वो गेट की ओर चलते समय सोते हुए कोचवान से टकरा गया। कोचवान जाग गया और उसने शेख से जाने का कारण पूछा। शेख ने कोचवान को पूरी कहानी सुनाई।

"अच्छा तो ये दोनों इस खुराफात में लगे थे!" कोचवान ने कहा। "मुझे इन पर पहले से ही शक था। सुबह को मैं पहला काम यह करूंगा - बीबीजी को बताऊंगा कि उन्होंने अपने घर में दो चोर पाले हुए हैं! मैं यह पक्का करूंगा कि वो इन दोनों चोरों को निकाल दें।"

और वही हुआ! शेख को चोरों को रंगे हाथों पकड़ने के लिए पचास रुपयों का इनाम मिला। उनकी जगह एक नए रसोइए और माली को रखा गया। शेख को रसोइए के मददगार की जगह कोचवान का सहायक बनाया गया। कुछ दिनों में शेख गाड़ी चलाना सीख गया और अब कोचवान जब भी छुट्टी पर जाता तो शेख घोड़ा-गाड़ी को चलाता। शेख बीबीजी को जहां वो कहतीं घुमाने के लिए ले जाता।

फिर बीबीजी का बेटा और उसकी बहू उनके साथ रहने के लिए

आ गए और उनके आने से शेख एक बार फिर मुसीबत में फंस गया!

"सीधे बैठो!" बीबीजी के नौजवान बेटे ने शेख को आदेश दिया। "संभाल कर गाड़ी चलाओ और अपने मुंह को बंद रखो। मुझे ढीले-ढाले, बातूनी ड्राइवर बिल्कुल नापसंद हैं।"

"जी, सरकार!" शेख ने कहा और दिए गए आदेशों का पालन करने लगा। एक शाम को वो मियां-बीबी को बाज़ार ले गया। गलती से घर आते समय महिला ने अपना बटुआ गिरा दिया। शेख ने बटुआ गिरते हुए देखा परंतु क्योंकि उससे हर समय बिल्कुल चुप रहने को कहा गया था इसलिए वो कुछ भी नहीं बोला।

"गधे, बेवकूफ!" मालिक चीखा जब उन्हें पता चला कि शेख ने बटुए को गिरते हुए देखा था। "भविष्य में तुम जब भी किसी भी चीज़ को गिरते हुए देखो तो उसे उठा लेना। समझे?"

"जी सरकार," शेख ने कहा।

कुछ दिनों बाद उसका मालिक कुछ मेहमानों के साथ बैठा था जब शेख एक बंडल को लेकर कमरे में घुसा।

"सरकार, यह सड़क पर गिरा हुआ था," उसने मेज़ पर बंडल को रखते हुए कहा। "इसलिए आपके आदेशानुसार मैं इसे उठा कर लाया हूं।"

"इसके अंदर क्या है?" एक मेहमान ने पूछा। शेख ने बंडल को खोला। बंडल के अंदर घोड़े की लीद थी, जो घोड़े ने गिराई थी। मालिक की आज्ञानुसार शेख उसे उठा लाया था!

"जाओ!" मालिक अपने मेहमानों के सामने लज्जित होते हुए चिल्लाया। "इसी क्षण मेरा घर छोड़ कर जाओ। मैं तुम्हें नौकरी से निकालता हूं!"

एक और नौकरी का अंत - वो भी कोई गलती किए बिना, शेख ने सोचा। परंतु उसने चार महीनों की तनख्वाह बचाई थी और बीबीजी ने उसे बतौर इनाम पचास रुपए दिए थे। यह सोचकर शेख खुश हो गया।

अम्मी ज़रूर खुश होंगी। यह सोचते हुए वो घर की ओर रवाना हुआ। इन पैसों से वो बहुत सारे चूज़े खरीद सकेगा। जल्दी ही चूज़े बड़े होकर मुर्गियां बन जाएंगी। इस तरह दिन में सपने संजोते हुए वो आराम से आगे बढ़ा।

ससुराल की यात्रा

आखिर शेख चिल्ली की अम्मी ने उसके लिए एक चांद जैसे सुंदर चेहरे वाली दुल्हन ढूंढ़ ही निकाली। उसका नाम फौज़िया था। फौज़िया के पिता, शेख के पिता को जानते थे और जब वो कई बरस पहले शेख से हकीमजी के घर मिले थे तो उन्हें शेख पसंद आया था।

शादी के कुछ महीनों बाद शेख चिल्ली को ससुराल जाने का निमंत्रण मिला। वो अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनकर सुबह-सुबह ही निकल पड़ा। ससुराल में उसकी पत्नी के माता-पिता, भाई-बहनों ने उसकी बहुत आवभगत की।

ठाठ से भोजन खाने के बाद शेख को उसके साले ने पान खाने को दिया। शेख ने पहले कभी पान नहीं खाया था। फिर भी उसने पान को अपने मुंह में डाला और उसे चबाने लगा। पान चबाते समय उसने इत्तफ़ाक़ से अपने मुंह को आइने में देखा। पान के लाल रस की एक पतली सी धार उसके मुंह से बह रही थी। शेख उसे खून समझ बैठा। वो डर से एकदम सहम गया!

मैं मर रहा हूं! उसने सोचा। मेरे अंदर अचानक कोई चीज़ टूट गई है या फिर इन लोगों ने मुझे ज़हर खिला दिया है! पर चाहें जो कुछ भी हो, मैं मर रहा हूं!

उसकी आंखें आंसुओं से भर गयीं। बिना एक भी शब्द कहे वो खड़े होकर सीधे अपने कमरे में गया और वहां पलंग पर जाकर लेट गया। यह जानने के लिए कि शेख का मिजाज अचानक क्यों बिगड़ गया

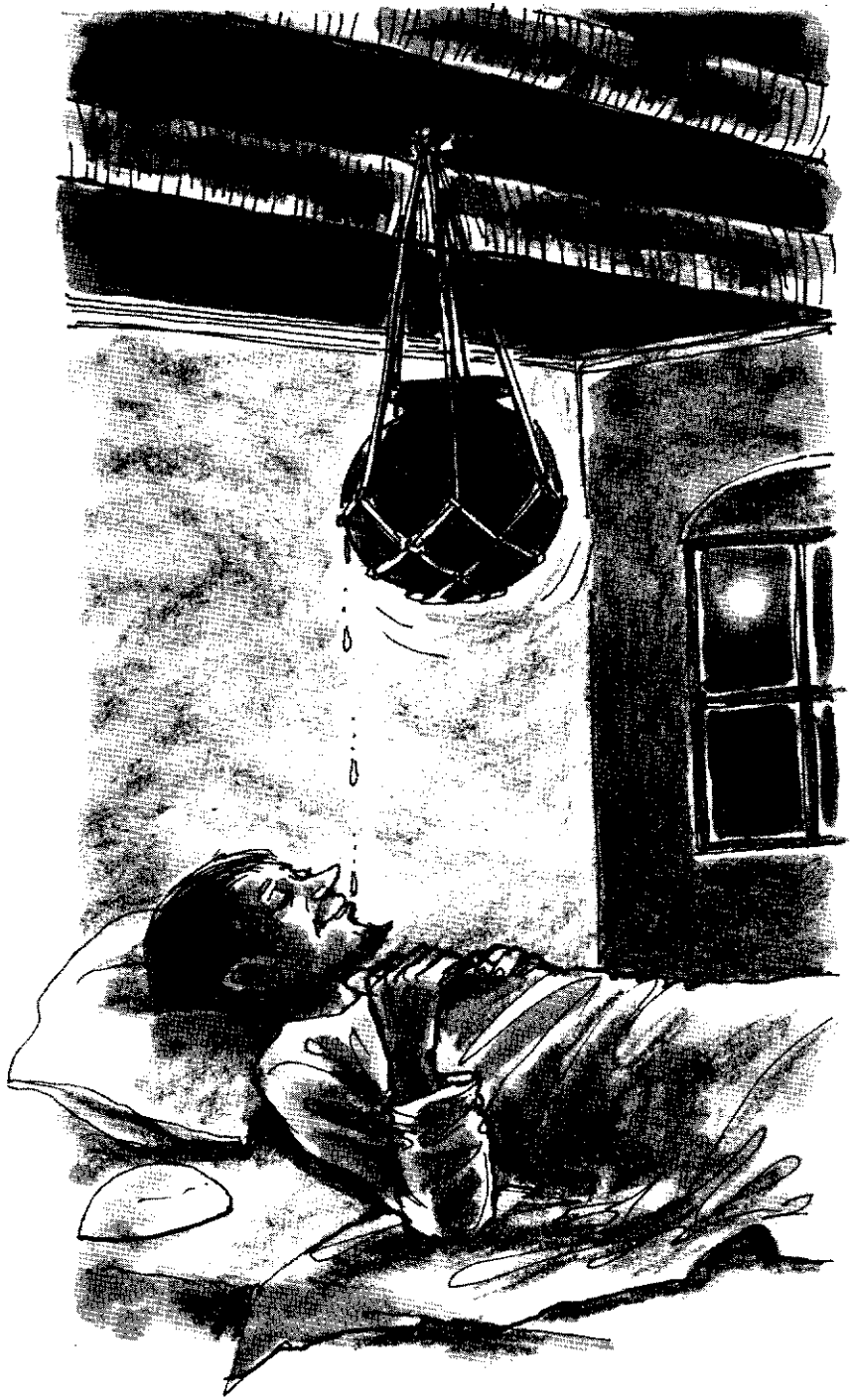

है उसका साला भी उसके पीछे-पीछे चला। शेख को पलंग पर पड़े, बिना कुछ बोले और बिलख-बिलख कर रोते हुए देखकर उसके साले को कुछ भी समझ में नहीं आया कि आखिर वो क्या करे! उसी समय शेख के ससुर भी कमरे में पधारे।

"बेटा, मुझे बताओ कि तुम्हें क्या हुआ है?" उन्होंने शेख से पूछा। "क्या तुम्हें कहीं दर्द हो रहा है?"

"अब्बू, मैं मर रहा हूं!" शेख ने ऐलान किया। "मेरा खून मेरे मुंह से रिस-रिस कर बाहर निकल रहा है।" फिर उसने पान के लाल रस की ओर अपनी उंगली से इशारा किया।

"क्या बस इतनी सी बात है?" ससुर ने अपनी हंसी को दबाते हुए पूछा।

"आप क्या इससे भी कुछ ज़्यादा चाहते हैं?" शेख ने नाराज़ होते हुए कहा।

शेख के अचानक बीमार हो जाने के रहस्य का आखिर पर्दाफाश हुआ! पान के लाल रस और खून के बीच में अंतर समझने के बाद शेख की सांस-में-सांस आई। उसके बाद वो पलंग पर से कूदकर अपने साले के साथ शहर के दर्शनीय स्थल देखने के लिए पैदल निकला।

लौटने से पहले अंधेरा हो गया था। शेख पलंग पर लेटते ही गहरी नींद में सो गया। रात में एक मच्छर के भिनभिनाने से उसकी आंख खुली। शेख ने उसे मारने की बहुत कोशिश की मगर असफल रहा। अंत में उसने मच्छर को मारने के लिए अंधेरे में उसकी ओर अपनी चप्पल फेंकी। मच्छर का भिनभिनाना बंद करने के बाद शेख दुबारा सो गया। परंतु उसकी फेंकी हुई चप्पल सीधे शहद से भरे एक छोटे बर्तन से जाकर टकराई थी। यह बर्तन छत की लकड़ी की बल्ली से सीधे शेख के ऊपर लटका था। चप्पल लगने के बाद बर्तन कुछ टेढ़ा हो गया और शेख के मुंह पर शहद टपकने लगा। सपने में शेख को शहद की मिठास आने लगी। सुबह उठने पर उसने अपने पूरे शरीर को शहद से सना पाया!

उसे नहाने के लिए पास की नदी पर जाना पड़ा। उसके कमरे से लगा एक भंडार कक्ष था। शेख बिना किसी को जगाए इस कमरे में से होकर नदी तक जा सकता था। शेख दबे पांव इस कमरे में घुसा और सीधा रुई के एक ढेर में जा गिरा। रुई की धुनाई हो चुकी थी और उसे सर्दियों के लिए रज़ाइयों में भरा जाना था।

रुई शेख के बालों, चेहरे और शरीर पर चिपक गई। वो अंधेरे में पिछले दरवाज़े को तलाश रहा था तभी उसकी साली भंडार कक्ष में कुछ लेने के लिए आई। वो एक अजीब रोएंदार आकार को देखकर डर गई और ज़ोर से चिल्लाई, "भूत! भूत!" और फिर कमरे में से तेज़ी से भागी।

शेख को पिछला दरवाज़ा मिल गया और वो घर से नदी की ओर दौड़ा। उसने जो अनुमान लगाया था उससे नदी कुछ दूर थी। रास्ते में भेड़ों की एक बाड़ थी। शेख दो-चार मिनट सुस्ताने के लिए वहां बैठ गया। भेड़ों के शरीर की गर्मी से शेख को एक झपकी आ गई लेकिन तभी उसे भेड़ों के बीच कोई चलता हुआ दिखाई दिया। वो एक चोर था! इससे पहले कि शेख कुछ करता उस चोर ने शेख के ऊपर एक कंबल फेंका और फिर शेख को अपने कंधे पर उठाकर दौड़ने लगा।

"अरे! तुम यह क्या कर रहे हो?" शेख ने खुद को छुड़ाते हुए गुस्से में कहा। "मैं कोई भेड़ थोड़े ही हूं!"

क्या बोलने वाला जानवर! चोर एकदम सहम गया! उसने कंबल और शेख को फेंका और अपनी जान बचाने के लिए सरपट भागा!

शेख नदी में कूदा और उसने रुई और शहद को रगड़-रगड़ कर साफ किया। फिर उसने चोर द्वारा छोड़े हुए कंबल को ओढ़ा और घर की ओर चला।

"भाईजान, आप कहां गए थे?" शेख के साले ने पूछा। "गनीमत है कि आप सही-सलामत हैं! आपके पास वाले कमरे में एक भूत है! हम भूत को भगाने के लिए अभी किसी को बुलाकर लाते हैं।"

"इसकी अब कोई ज़रूरत नहीं है," शेख चिल्ली ने शांत भाव में

कहा। "मैं खुद ही भूत से निबटने के लिए काफी हूं।"

फिर शेख ने खुद को भंडार कक्ष में बंद कर लिया और फिर झाड़ू से रुई की खूब धुनाई की। साथ में वो ज़ोर-ज़ोर से झूठ-मूठ के कुछ मंत्र भी पढ़ता रहा! उसके बाद वो कमरे में से किसी महान विजेता की तरह निकल कर आया। शेख ने अपना बाकी समय ससुराल में मज़े में बिताया। वो लगातार परिवारजनों और पड़ोसियों की प्रशंसा का पात्र बना रहा।

मेहमान जो जाने को तैयार न था

शेख चिल्ली की अम्मी और उसकी पत्नी फौज़िया दोनों एक महीने के लिए कहीं जा रहीं थीं। परंतु दोनों को ही शेख चिल्ली को घर में अकेले छोड़कर जाने की बात अखर रही थी।

"पिछली बार जब हमने तुम्हें सिर्फ एक दिन के लिए अकेले छोड़ा था, तो तुमने घर को जलाकर लगभग राख कर दिया था!" फौज़िया ने कहा। "अगर हम तुम्हें पूरे महीने के लिए अकेले छोड़कर गयीं तो फिर तो अल्लाह ही मालिक है!"

"बेगम, तुम बिना किसी बात के फिक्र करती हो," शेख ने उसकी हिम्मत बांधने के लिए कहा। "मैं अपनी और घर की देखभाल करने के लिए पूरी तरह सक्षम हूं। परंतु तुम्हारी तसल्ली के लिए मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि तुम्हारी गैर-मौजूदगी में मैं अपने पुराने दोस्त और चचेरे भाई इरफान भाई से मिलने के लिए जाऊंगा।"

"ठीक है!" शेख की बीबी को अब कुछ शांति मिली। "हमारे आने के एक दिन बाद तुम भी वापिस आ जाना।"

शेख चिल्ली का चचेरा भाई इरफान पास के ही गांव में अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ रहता था। उसकी एक छोटी सी कपड़े की दुकान थी। इरफान ने बचपन में शेख और उसकी अम्मी के साथ काफी दिन गुज़ारे थे। उन गर्दिश के हालातों में भी जब उनकी माली हालत बहुत खराब थी, उन्होंने इरफान का हमेशा बहुत ख्याल रखा था।

जब शेख अचानक से इरफान के घर पहुंचा तो इरफान को बहुत खुशी हुई। इरफान को अपने ऊपर लदे तमाम अहसानों को चुकाने का

यह अच्छा मौका नज़र आया।

शेख का पहला हफ्ता बड़े आराम से बीता। परंतु जब उसने जाने का कोई नाम नहीं लिया तो इरफान की पत्नी कुछ गुस्सा हुई।

"तुम्हारा भाई यहां और कितने दिन रहेगा?" उसने अपने पति से पूछा।

"उसकी मर्ज़ी," इरफान ने जवाब दिया। "तुम क्यों फिक्र कर रही हो। वो पूरा दिन दुकान में मेरे साथ गुज़ारता है और फिर शाम को आकर रोज़ तुम्हारी और बच्चों की कुछ मदद करता है।"

"वो सब ठीक है," बीबी ने रुखाई से कहा, "पर देखो वो खाता कितना ज़्यादा है! उससे हमारा खर्च कितना अधिक बढ़ गया है!"

"मेरे ऊपर उस परिवार का बहुत बड़ा कर्ज़ है और इस थोड़े से खर्च की मुझे कोई परवाह नहीं है," इरफान ने कहा। "देखो बेगम, कुछ दिन थोड़ा कम खाने और एक मेहमान को खिलाने से तुम्हारा कुछ खास बिगड़ेगा नहीं!"

उसकी मोटी बीबी गुस्से में रोने लगी। "तुमसे बात करने से क्या फायदा," उसने नाक बिचकाते हुए कहा, "अब मुझे ही इसके बारे में कुछ सोचना होगा।"

कुछ दिनों के बाद एक दिन इरफान जब शेख के साथ घर वापिस लौटे तो उन्होंने देखा कि उनकी बीबी और बच्चे किसी यात्रा के लिए तैयार थे।

"भाईजान," इरफान की बीबी ने शेख से कहा, "मुझे अभी-अभी अपने पिता के सख्त बीमार होने की खबर मिली है। इसलिए हमें आज रात को ही वहां जाना होगा।"

"अल्लाह जल्दी ही आपके पिता को ठीक करे, भाभीजी," शेख ने कहा। "आप लोग घर की कोई चिंता न करें। आपके वापिस आने तक मैं घर की हिफाज़त करूंगा।"

"पर भाईजान," इरफान की बीबी ने विरोध प्रकट करते हुए कहा, "आप यहां रहेंगे कैसे? घर में तो कुछ खाने को नहीं है। खैरियत इसी

में है कि आप वापिस अपने घर लौट जाएं।"

"तब मैं कल सुबह चला जाऊंगा," शेख ने कहा। "मेरे घर में ताला पड़ा है। मुझे कल किस दोस्त के घर जाना है यह बात मैं आज रात को तय कर लूंगा।"

अगले दिन सुबह घर छोड़ने से पहले शेख ने घर की थोड़ी सफाई करने की सोची। बच्चों के पलंग के गद्दे के नीचे उसे एक छोटी चाबी दिखी। वो रसोई की अल्मारी की चाबी थी। इरफान की बीबी ने उसे यहां पर छिपा कर रखा था! अलमारी में कई दिनों के लिए आटा और दाल रखा था।

शेख ने सोचा कि अब अम्मी और फौज़िया के आने से पहले मुझे घर जाने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। यह सोचकर शेख अपने लिए खाना बनाने लगा।

इस बीच जब इरफान को पता चला कि उसकी बीबी पिता के बीमारी की कहानी एकदम मन-गढ़ंत थी तो वो अपनी बीबी पर बौखला उठा। दो दिन बाद इरफान का पूरा परिवार जब घर लौटा तो शेख ने बड़ी गर्मजोशी से उनका स्वागत किया!

कुछ दिन और बीत गए। शेख ने अभी भी जाने का कोई नाम नहीं लिया। इरफान की बीबी का लगातार पारा चढ़ रहा था। एक शाम को वो पलंग पर जा पड़ी और ज़ोर-ज़ोर से कराहने लगी।

"हाय! हाय!" उसने अपने पति से कराहते हुए कहा, "यह दर्द तो मुझे लेकर ही मरेगा! यह बिल्कुल उसी तरह का दर्द है जो भाईजान की अम्मी को होता था। उनसे कहो कि वो उसी हकीम के पास जाएं जिन्होंने उनकी अम्मी को ठीक किया था और मेरे लिए भी उस मर्ज़ की दवा लेकर आएं। हां, उन्हें दवाई लेकर यहां आने की ज़रूरत नहीं है। हम किसी को भेज कर दवा मंगवा लेंगे। कृपा करके भाईजान से जल्दी जाने को कहो!"

"भाभीजी, मैं सुबह होते ही यहां से चला जाऊंगा," शेख ने उन्हें दिलासा दिलाते हुए कहा। "रात के अंधेरे में मैं अपना रास्ता भूल सकता

हूं। इंशाअल्लाह, आप की तबियत जल्दी ही दुरुस्त हो जाएगी!"

इरफान की बीबी सारी रात कराहती रही। उसकी कराहटों को सुन कर शेख को एक बुरा सपना आया। सपने में उसे लगा जैसे कोई खूंखार शेर उसका पीछा कर रहा हो। शेर से पीछा छुड़ाने के प्रयास में शेख पलंग से नीचे गिर पड़ा और लुढ़क कर उसके नीचे चला गया। उसके बाद बुरा सपना खत्म हुआ और शेख गहरी नींद सो पाया।

अगली सुबह इरफान को शेख का पलंग खाली नज़र आया। "बेगम, वो तो पहले ही जा चुका है," इरफान ने अपनी बीबी से कहा।

बीबी अपने पलंग से कूद कर दौड़ती हुई आई। "मैं सच में बीमार नहीं थी!" उसने हंसते हुए अपने पति से कहा।

"और मैं भी सच में अभी गया नहीं हूं!" शेख चिल्ली ने पलंग के नीचे से निकलते हुए कहा। "और वैसे भी अब भाभीजी की तबियत ठीक हो गई है!"

काला धागा

शेख चिल्ली की एक नौकरी अभी छूटी थी और वो दूसरी की तलाश कर रहा था। उन्हीं दिनों उसने कुछ पैसे कमाने के लिए जंगल जाकर लकड़ी काटकर लाने की बात सोची। वो एक बहुत सुहाना दिन था और शेख चिल्ली अपनी कुल्हाड़ी लेकर जंगल की ओर चला। जंगल में वो एक पेड़ पर चढ़कर एक बहुत मज़बूत डाल को काटने लगा। उस डाल पर बहुत सारी चींटियां उसके पास से होकर जा रहीं थीं। शेख ने उनका बहुत बारीकी से अध्ययन किया। चींटियां कितनी व्यस्त थीं! परंतु वे जा कहां रहीं थीं? वो चींटियों का तने पर चढ़ना देखता रहा और साथ में पेड़ की डाल भी काटता रहा। वो डाल काटते समय बीच में आई चींटियों को हटाता रहा।

सारी चींटियां अपने सुल्तान से मिलने के लिए जा रही होंगी, शेख ने सोचा। वो उसे मेरे बारे में बताएंगी। फिर सुलतान खुद मुझसे मिलने के लिए आएगा। उसके सिर पर एक छोटी सुनहरी पगड़ी होगी। उसे देखकर ही मैं उसे पहचान जाऊंगा! वो इतनी सारी चींटियों की जान बचाने के लिए मेरा शुक्रिया अदा करेगा। फिर वो मेरी कुछ मदद करना चाहेगा। वो मुझे फलां...

"सावधान! तुम गिरने वाले हो!" नीचे से गुज़रता एक राहगीर चिल्लाया।

कर्र... की एक ज़ोरदार आवाज़ हुई और जिस डाल को शेख काट रहा था वो टूट कर नीचे गिरी और उसके साथ-साथ शेख भी गिरा!

"तुम्हें चोट तो नहीं आई?" राहगीर ने शेख को उठाते हुए पूछा।

"नहीं," शेख ने कहा। शेख भाग्यशाली निकला क्योंकि वो पत्तियों के एक ढेर के ऊपर जाकर गिरा। "अच्छा यह बताइए कि आपको यह कैसे पता चला कि मैं गिरने वाला हूं? क्या आप कोई ज्योतिषी हैं?"

राहगीर एक दर्ज़ी था, ज्योतिषी नहीं! परंतु वो पैसे बनाने का यह मौका गंवाना नहीं चाहता था। इसलिए उसने कहा कि वो एक ज्योतिषी है।

"तुम अगर मुझे एक रुपया दोगे," उसने कहा, "तो मैं तुम्हारा पूरा भविष्य बता दूंगा।"

"परंतु मेरे पास तो सिर्फ एक आना है," शेख ने अपनी जेब में से सिक्के को टटोलते और उसे देते हुए कहा। "कम-से-कम मुझे इतना ही बता दो कि मैं कब तक ज़िंदा रहूंगा।"

दर्ज़ी ने शेख की हथेली को बहुत करीबी से पढ़ने का नाटक किया।

"मौत तुम्हारा पीछा कर रही है!" उसने बड़ी गंभीरता से कहा।

"हाय अल्लाह!" शेख ने आह भरी।

"परंतु यह तुम्हारी रक्षा करेगा," दर्ज़ी ने अपनी जेब से एक काला धागा निकालते हुए कुछ मंत्र पढ़ा और फिर धागे को शेख के गले में बांध दिया।

"जब तक धागा टूटेगा नहीं तब तक तुम जीवित रहोगे!"

शेख ने दर्ज़ी का शुक्रिया अदा किया, फिर कटी टहनियों को इकट्ठा किया और फिर गंभीरता से सोचते हुए घर की ओर रवाना हुआ।

"क्या बात है?" उसकी बीबी फौज़िया ने पूछा। वो घर की कमाई बढ़ाने के लिए कपड़े पर कुछ कढ़ाई कर रही थी। कढ़ाई को रखकर वो शेख के पीने के लिए ठंडा पानी लाई। अपने गले में बंधे काले धागे को सहलाते हुए सहमी हुई हालत में शेख ने फौज़िया को अपनी पूरी आपबीती सुनाई।

फौज़िया ने सब सुनने के बाद तुरंत काले धागे को खींचकर तोड़ दिया। "अब तुम इस पूरी बकवास को हमेशा के लिए भूल सकते हो!" उसने कहा।

शेख तुरंत अपनी आंखे बंद करके लेट गया।

"क्या हुआ?" फौज़िया ने पूछा।

"मैं मर गया हूं," शेख ने कहा। "तुम्हारे धागा तोड़ने से मैं अब मर गया हूं।"

तभी उसकी अम्मी घर में घुसीं। "हाय अल्लाह!" वो रोने लगीं, "मेरे बेटे को यह क्या हो गया?"

"अम्मी, आपका लाडला समझ रहा है कि वो मर चुका है!" फौज़िया ने कहा और उसके बाद उसने अम्मी को पूरी कहानी सुनाई। अब अम्मी की बारी थी शेख चिल्ली की बेवकूफी पर हंसने की! अम्मी और फौज़िया ने शेख को बहुत समझाया कि वो मरा नहीं बल्कि अच्छी तरह जिंदा है परंतु शेख उनकी एक भी बात सुनने को तैयार नहीं हुआ!

फिर शेख को उसके हाल पर छोड़कर दोनों औरतें घर के अन्य कामों में लग गयीं। इस बीच शेख ज़मीन पर एकदम सीधा लेटा रहा। कुछ देर बाद उसने अपनी आंखें खोलीं और चारों ओर देखा। पर जैसे ही फौज़िया ने उसकी तरफ देखा शेख ने झट से अपनी आंखें बंद कर लीं!

फौज़िया एक होशियार महिला थी। "अम्मीजी," उसने ज़ोर से कहा, "अब तो यह मातम का घर है। इस समय मिठाई खाने के बारे में भला कोई कैसे सोच सकता है? अम्मी, आप जो गर्म-गर्म गुलाब जामुन लायीं हैं, उन्हें हम फेंक देते हैं।"

गुलाब जामुन? शेख की सबसे मनपसंद मिठाई! शेख अब मौत को पूरी तरह भूल चुका था। "नहीं! नहीं!" उसने उठते हुए कहा। "कृपा कर उन्हें मत फेंको। मैं अब ज़िंदा हो गया हूं!"

तेंदुए का शिकार

अंत में शेख चिल्ली का भाग्य जागा! झज्जर के नवाब ने शेख चिल्ली को नौकरी पर रख लिया था। शेख चिल्ली अब समाज का एक गणमान्य व्यक्ति था।

एक दिन नवाब साहब शिकार के लिए जा रहे थे। शेख चिल्ली ने भी साथ आने की विनती की। "अरे मियां, तुम घने जंगलों में क्या करोगे?" नवाब ने पूछा। "जंगल कोई दिन में सपने देखने की जगह थोड़े ही है! क्या तुमने कभी किसी चूहे का शिकार किया है, जो तुम अब तेंदुए का शिकार करोगे?"

"सरकार, आप मुझे बस एक मौका दीजिए अपनी कुशलता दिखाने का," शेख चिल्ली ने बड़े अदब के साथ फर्माया।

तो अब जनाब शेख चिल्ली भी हाथ में बंदूक थामे शिकार पार्टी के साथ हो लिए। उसने अपने आपको एक मचान के ऊपर पाया। थोड़ी ही दूर पर एक बड़ा पेड़ था जिससे तेंदुए का भोजन - एक बकरी बंधी थी। चांदनी रात थी। इस माहौल में जब भी तेंदुआ बकरी के ऊपर कूदेगा तो वो साफ दिखाई देगा। दूसरी मचानों पर नवाब साहब और उनके अनुभवी शिकारी चुपचाप तेंदुए के आने का इंतज़ार कर रहे थे।

इस तरह जब कई घंटे बीत गए तो शेख चिल्ली कुछ बेचैन होने लगा। "वो कमबख्त तेंदुआ कहां है?" उसने मचान पर अपने साथ बैठे दूसरे शिकारी से पूछा।

"चुप बैठो!" शिकारी ने फुसफुसाते हुए कहा। "इस तरह तुम पूरा बेड़ा ही गर्क कर दोगे!"

शेख चिल्ली चुप हो गया परंतु उसे यह अच्छा नहीं लगा। यह भी भला कोई शिकार है? हम सब लोग पेड़ों में छिपे बैठे हैं और एक गरीब से जानवर का इंतज़ार कर रहे हैं! हमें अपनी बंदूकें उठाए पैदल चलना चाहिए! परंतु लोग कहते हैं कि तेंदुआ बहुत तेज़ दौड़ता है। वो जंगल में उसी तरह दौड़ता है जैसे मेरी पतंग आसमान में दौड़ती है!

खैर छोड़ो भी। हम उसके पीछे-पीछे दौड़ेंगे। हम अखिर तक उसका पीछा करेंगे। धीरे-धीरे करके बाकी शिकारी पीछे रह जाएंगे। मैं उन सब को पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाऊंगा। मैं तेंदुए के एकदम पीछे जाऊंगा। तेंदुए को पता होगा कि मैं उसके एकदम पीछे हूं। वो रुकेगा। वो मुड़ेगा। उसे पता होगा कि अब उसका अंत नज़दीक है। वो सीधा मेरी आंखों में देखेगा। एक शिकारी की आंखों में देखेगा। और फिर मैं....

धांय! और तेंदुआ, मिमियाती बकरी के सामने मर कर गिर गया। वो बस बकरी को दबोचने वाला ही था!

एक शिकारी बड़ी सावधानी से तेंदुए के मृत शरीर को देखने के लिए गया। तेंदुआ मर चुका था। पर इतनी फुर्ती से उसे किसने मारा था?

शेख चिल्ली के साथी ने पीठ ठोककर शेख चिल्ली को शाबाशी दी।

"क्या गज़ब का निशाना है!" उसने कहा। "तुमने तो हम सबको मात कर दिया और आश्चर्य में डाल दिया!"

"शाबाश मियां! शाबाश!" नवाब साहब ने शेख चिल्ली को बधाई देते हुए कहा। इस बीच में पूरी शिकार पार्टी शेख द्वारा मारे गए तेंदुए का मुआयना करने के लिए इकट्ठी हो गई थी। "मुझे लगा कि कोई भी शिकारी मुझे चुनौती नहीं दे पाएगा, परंतु शेख चिल्ली ने हम सबको सबक सिखा दिया। वाह! क्या उम्दा निशाना था!"

शेख चिल्ली ने बड़े अदब से अपना सिर झुकाया। वो तेंदुआ कब आया और कैसे उसकी बंदूक चली इसका शेख चिल्ली को कोई भी अंदाज नहीं था!

परंतु तेंदुआ मर चुका था। और अब शेख चिल्ली एक अव्वल दर्ज़े का शिकारी बन चुका था! इस बारे में अब किसी को कोई शक नहीं था!

सबसे झूठा कौन?

झज्जर के नवाब युद्ध लड़ने के लिए कई महीनों से बाहर गए थे। उनकी अनुपस्थिति में उनके छोटे भाई - छोटे नवाब ही राज-पाट का सारा काम संभालते थे।

नवाब साहब धीरे-धीरे करके शेख चिल्ली को चाहने लगे थे। उन्हें उसकी सरलता में आनंद आता था। परंतु छोटे नवाब शेख चिल्ली को पूरी तरह बेवकूफ और कामचोर मानते थे। एक दिन उन्होंने भरी सभा में शेख चिल्ली को डांटा और उसका अपमान किया।

"एक अच्छा आदमी बताए हुए काम से भी कहीं ज़्यादा काम करता है और एक तुम हो जो सरल से काम को भी ठीक ढंग से नहीं कर पाते हो," उन्होंने कहा। "तुम अस्तबल में घोड़ा लेकर जाते हो पर उसे बांधना भूल जाते हो। तुम जब कोई बोझा उठाते हो तो या तो गिर जाते हो या फिर तुम्हारे पैर लड़खड़ाते हैं! तुम जो काम करते हो उसे ध्यान लगाकर क्यों नहीं करते हो!"

दरबार में कई सदस्यों को यह सुनकर मज़ा आया। इस दौरान शेख चिल्ली अपना मुंह लटकाए रहा। उसके कुछ दिनों बाद शेख चिल्ली छोटे नवाब के घर के सामने से होकर जा रहा था जब उसे तुरंत अंदर बुलाया गया।

"किसी अच्छे हकीम को बुलाकर लाओ। जल्दी! बेगम काफी बीमार हैं।"

"जी सरकार," शेख चिल्ली ने कहा और आदेश का पालन करने में फटाफट लग गया। थोड़ी ही देर में एक हकीम, एक कफन बनाने

वाला और दो कब्र खोदने वाले मज़दूर भी वहां पहुंच गए!

"यह सब क्या हो रहा है?" छोटे नवाब ने गुस्से में पूछा। "यहां तो कोई मरा नहीं है। मैंने तो सिर्फ एक हकीम को बुला लाने के लिए कहा था। बाकी लोगों को कौन बुलाकर लाया है?"

"मैं सरकार!" शेख चिल्ली ने कहा। "आपने ही तो कहा था कि एक अच्छा आदमी बताए गए काम से भी बहुत ज़्यादा काम करता है। इसलिए मैंने सभी संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए यह कदम उठाया। अल्लाह करे कि बेगम साहिबा जल्दी से ठीक हो जाएं। पर हारी-बीमारी में क्या हो जाए यह किसे पता!"

छोटे नवाब राज-पाट के काम में ज़्यादा रुचि नहीं लेते थे। वो अपना अधिकतर समय शिकार, शतरंज या अन्य खेलों को खेलने में बिताते थे। एक दिन उन्होंने एक प्रतियोगिता रखी जिसमें सबसे बड़े झूठ बोलने वाले को विजयी घोषित किया जाना था! जीतने वाले को सोने की एक हज़ार दीनारें भी मिलनी थीं!

कई झूठ बोलने में माहिर लोग इनाम जीतने के लिए सामने आए। एक ने कहा, "सरकार, मैंने भैंसों से भी बड़ी चींटियां देखीं हैं जो एक बार में चालीस सेर दूध देती हैं!"

"क्यों नहीं?" छोटे नवाब ने कहा। "यह संभव है।"

"सरकार, हर रात मैं चंद्रमा तक उड़ते हुए जाता हूं और सुबह होने से पहले ही उड़कर वापिस आ जाता हूं!" एक अन्य झूठ बोलने वाले ने डींग हांकी।

"हो सकता है," छोटे नवाब ने कहा। "हो सकता है तुम्हारे पास कोई रहस्यमयी ताकत हो।"

"सरकार," एक तोंद निकले मोटे आदमी ने कहा, "जबसे मैंने एक तरबूज़ के कुछ बीज निगले हैं तब से मेरे पेट में छोटे-छोटे तरबूज़ पैदा हो रहे हैं। जब कोई तरबूज़ पक जाता है तो वो फूट जाता है और उससे मुझे अपना भोजन मिल जाता है। अब मुझे और कुछ खाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती है।"

"तुमने किसी ताकतवर तरबूज़ के बीज निगल लिए होंगे," छोटे नवाब ने बिना पलकें झपके कहा।

"सरकार, क्या मुझे भी बोलने की इजाज़त है?" शेख चिल्ली ने पूछा।

"ज़रूर," छोटे नवाब ने ताना कसते हुए कहा। "तुमसे हम किन प्रतिभाशाली शब्दों की उम्मीद करें?"

"सरकार," शेख चिल्ली ने ज़ोर से कहा, "आप इस पूरे राज्य के सबसे बड़े बेवकूफ आदमी हैं! आपको नवाब के सिंहासन पर बैठने का कोई हक नहीं है!"

पूरी राजसभा में सन्नाटा छा गया। तब छोटे नवाब चिल्लाए, "पहरेदारों, इस नाचीज़ को गिरफ्तार कर लो!"

शेख चिल्ली को पकड़ा गया और खींच कर लाया गया।

"निकम्मे, बेशरम!" छोटे नवाब का गुस्सा उबल कर बाहर निकला, "तुम्हारी यह जुर्रत कैसे हुई! अगर तुमने इसी वक्त हमारे पैरों में गिरकर माफी नहीं मांगी तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा!"

"पर सरकार," शेख चिल्ली ने विरोध जताते हुए कहा, "आपने ही तो कहा था कि आप दुनिया का सबसे बड़ा झूठ सुनना चाहते हैं!" फिर वो निष्कपट भाव से छोटे नवाब को देखने लगा। "जो कुछ मैंने कहा उससे बड़ा क्या और कोई झूठ हो सकता है?"

छोटे नवाब को समझ में नहीं आया कि क्या करें! क्या शेख चिल्ली अब झूठ बोल रहा है या वो पहले झूठ बोल रहा था? शेख चिल्ली उतना बड़ा बेवकूफ नहीं था जितना छोटे नवाब उसे समझते थे!

छोटे नवाब धीमे से हंसे और उन्होंने कहा, "शाबाश! तुम ईनाम जीते!"

सब लोगों ने शेख चिल्ली की अकल को सराहा। वो शान से हज़ार सोने की दीनारें लेकर घर गया। छोटे नवाब चाहें थोड़े बेवकूफ हों परंतु वो हैं दिलदार, शेख ने सोचा।

चोरी और इनाम

झज्जर राज्य पूरी तरह डर के माहौल में ग्रस्त था। कई हफ्तों से लगातार चोरियां हो रहीं थीं और हर बार चोर आसानी से भागने में सफल हो जाता था। रईसों के घरों में चोरी हुई थी और गरीबों के घरों में भी। जब राजकोश में चोरी हुई तब नवाब साहब कुछ जागे। एक राजसी फरमान जारी किया गया। जो कोई भी चोर को पकड़ेगा उसका नवाब साहब सम्मान करेंगे और उसे इतना धन दिया जाएगा जिससे वो अपनी बाकी ज़िंदगी सुख-चैन से बिता सके।

शेख चिल्ली इस पूरे नाटक से अविचलित था। उसके घर में चोर को आमंत्रित करने वाला कुछ था ही नहीं। नवाब साहब से अच्छी तनख्वाह पाने के बाद भी शेख चिल्ली और उसकी पत्नी की कोई बहुत अच्छी हालत नहीं थी। अक्सर वो अपनी तनख्वाह का कुछ हिस्सा बेकार के सपनों या काम के समय किसी बेवकूफी में गंवा देता था। जब कभी भी उसकी जेब में पैसे होते तो वो उन्हें बड़ी खुशी और दरियादिली से खर्च करता। वो गरीब लोगों की मदद करने से कभी नहीं चूकता।

एक दिन शेख चिल्ली ने पड़ोसी राज्य में जाकर एक मशहूर फकीर की दुआ लेने की सोची। इसका मतलब उसे घर से चार दिनों के लिए बाहर रहना था।

"हाय अल्लाह! तुम मुझे इस डर के माहौल में इतने दिनों के लिए छोड़कर जाने की बात सोच रहे हो!" उसकी बीबी फौज़िया ने कहा। "अगर इस बीच में घर में चोर आ धमका तो क्या होगा?"

"बेगम, कोई भी समझदार चोर हम पर अपना समय बरबाद नहीं करेगा!" शेख ने उसे दिलासा दिलाते हुए कहा। "जब तक मैं वापिस नहीं आता तब तक हमारी पड़ोसिन तुम्हारे साथ रात को आ कर सोया करेंगी। और किसे पता? यह भी हो सकता है मैं, हम दोनों के लिए कोई अच्छी तकदीर लेकर वापिस लौटूं!"

अगली सुबह वो रवाना हो गया और फिर कुछ दिनों बाद उस फकीर का दिया हुआ एक तावीज़ लेकर वापिस लौटा।

"फकीर ने कहा कि इस तावीज़ से हमारे घर में सुख और शांति कायम रहेगी," शेख चिल्ली ने कहा।

फौज़िया ने प्रार्थना के अंदाज़ में उस तावीज़ को अपनी आंखों और ओठों से छुआया। "इंशाअल्लाह!" उसने हल्के से कहा।

भोजन के बाद शेख चिल्ली अपने घर की छत पर चला गया। काले आसमान में हज़ारों-लाखों सितारे झिलमिला रहे थे। छत पर टहल-कदमी करते समय शेख चिल्ली का दिमाग तमाम खुशहाल यादों से भर गया। उसे अपनी प्यारी मरहूम अम्मी की याद आई। उसे अपने अब्बाजान की भी कुछ धुंधली सी याद आई। जब शेख बिल्कुल छोटा था तभी अब्बा का देहांत हो गया था। शेख को अपने बचपन के मुक्त दिनों की भी याद आई। कैसे उसकी पतंग आसमान को छूती थी, जैसे कोई ज़िंदा जानवर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा हो - ऊपर, ऊपर और ऊपर!

शेख चिल्ली अपनी यादों की दुनिया में खो गया। वो चहल-कदमी करता-करता सीधे अपनी छत से नीचे कच्ची सड़क पर एक ज़ोरदार आवाज़... धम्म! से आकर गिरा।

वो भाग्यशाली रहा क्योंकि दो-चार खरोंचों के अलावा उसे कोई खास चोट नहीं आई। वो सड़क पर गिरने की बजाए पुराने कपड़ों की एक गठरी पर आकर गिरा था। जैसे ही पड़ोस के लोग अपनी लालटेनें लेकर मौके पर शिनाख़्त करने के लिए पहुंचे उन्हें कुछ पुराने कपड़े उठकर भागते हुए दिखाई दिए! उन्होंने उस भागते हुए आदमी को तुरंत

पकड़ लिया और उसे फौरन बेनकाब किया। वो वही चोर निकला जिसने काफी अर्से से पूरे राज्य में आतंक मचाया था! चोर शेख चिल्ली के घर चोरी करने के लिए आया था। उसे उम्मीद थी कि बेफिक्र रहने वाले शेख चिल्ली के घर पर, ज़रूर कहीं धन छिपा हुआ होगा!

अगले दिन नवाब साहब ने सारी सभा के सामने चोर को पकड़ने के लिए शेख चिल्ली को बधाई दी और इस बात की भी पुष्टि की कि भविष्य में शेख चिल्ली के परिवार का पूरा खर्च राजकोश वहन करेगा।

तावीज़ का आशीर्वाद फल-फूल रहा था!